नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 391, नई दिल्ली, मंगलवार 31 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

रिश्ता चाहे इस धरती पर कोई भी हो, सबका सिर्फ़ एक ही पासवर्ड है, 'भरोसा'

03 लिवर खराब होने के लक्षण....
06 द्वार खोलना: शिक्षा में शारीरिक और सामाजिक समावेशन
08 प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिले सांसद दिलीप राय

सड़कों से गायब हुए फुटपाथ : अतिक्रमण पर आँख बंद करके बैठा प्रशासन

डॉ. शैलेश शुक्ला

सड़कों से गायब होते फुटपाथ आज भारत के शहरी जीवन की एक कठोर सच्चाई बन चुके हैं, और अभी तक की स्थिति तक उपलब्ध नवीनतम सरकारी रिपोर्टों, नीतिगत दस्तावेजों और विश्वसनीय अध्ययनों को देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि यह समस्या न तो नई है और न ही आकस्मिक, बल्कि यह लगातार उपेक्षा, कमजोर शहरी नियोजन और प्रशासनिक निष्क्रियता का परिणाम है। भारत सरकार के सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट "रोड एक्सीडेंट इन इंडिया 2022" के अनुसार देश में कुल सड़क दुर्घटना मृत्यु में लगभग 19 प्रतिशत पैदल यात्रियों की हिस्सेदारी रही। इसका सीधा अर्थ यह है कि हर पाँच में से लगभग एक व्यक्ति, जो सड़क पर जान गंवा रहा है, वह पैदल चल रहा था। यह आँकड़ा केवल दुर्घटना का नहीं, बल्कि शहरी ढाँचे की प्राथमिकताओं का दर्पण है, जहाँ पैदल चलने वालों की सुरक्षा को व्यवस्थित रूप से नजरअंदाज किया गया है।

भारत के शहरी ढांचे में पैदल यात्रियों की भूमिका को समझना आवश्यक है। विभिन्न शहरी परिवहन अध्ययनों, जैसे कि "नैशनल अर्बन ट्रांसपोर्ट पॉलिसी 2006" और उसके बाद के संशोधित दृष्टिकोणों में यह स्वीकार किया गया है कि भारतीय शहरों में 20 से 40 प्रतिशत तक यात्राएँ छोटी दूरी की होती हैं, जिन्हें लोग पैदल या गैर-मोटर चालित साधनों से तय करते हैं। इसके बावजूद, शहरों की सड़क योजना मुख्यतः मोटर वाहनों की गति और संख्या को ध्यान में रखकर बनाई जाती है। नीति और व्यवहार के इस अंतर ने फुटपाथों को 'वैकल्पिक' बना दिया है, जबकि वे वास्तव में शहरी जीवन की मूलभूत आवश्यकता हैं। परिणामस्वरूप, आज अधिकांश शहरों में या तो फुटपाथ मौजूद ही नहीं हैं, या वे इतने खंडित, संकरे और अव्यवस्थित हैं कि उनका उपयोग करना जोखिम भरा हो जाता है।

फुटपाथों के अतिक्रमण की समस्या इस संकट को और गहरा करती है। शहरी स्थानीय निकायों के अधिकार क्षेत्र में आने वाले फुटपाथ, व्यवहार में बहुउद्देश्यीय और अनियंत्रित उपयोग के स्थल बन गए हैं। उन पर रेहड़ी-पटरी, अस्थायी दुकानें, अवैध पार्किंग, निर्माण सामग्री और कई बार स्थायी संरचनाएँ तक देखी जा सकती हैं। यह स्थिति केवल अवैधता का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह शहरी अर्थव्यवस्था और नियोजन के बीच असंतुलन का भी संकेत है। "Street Vendors (Protection of Livelihood and Regulation of Street Vending) Act, 2014" ने स्पष्ट रूप से यह प्रावधान किया था कि स्ट्रीट वेंडर्स को व्यवस्थित तरीके से निर्दिष्ट क्षेत्रों में स्थान दिया जाए, ताकि उनकी आजीविका भी सुरक्षित रहे और सार्वजनिक स्थानों का अतिक्रमण भी नियंत्रित हो। लेकिन 2026 तक उपलब्ध विभिन्न राज्य स्तरीय क्रियान्वयन रिपोर्टों और मीडिया विश्लेषणों से यह स्पष्ट है कि अधिकांश शहरों में टाउन वेंडिंग कमेटियाँ पूरी तरह सक्रिय नहीं हैं और न ही पर्याप्त वेंडिंग जोन विकसित किए गए हैं। इस नीति-क्रियान्वयन अंतर ने फुटपाथों को अव्यवस्था के हवाले कर दिया है।

प्रशासनिक दृष्टि से देखें तो समस्या और भी जटिल दिखाई देती है। नगर निगमों और विकास प्राधिकरणों के पास अतिक्रमण हटाने के लिए पर्याप्त कानूनी शक्तियाँ मौजूद हैं, लेकिन कार्रवाई प्रायः असंगत और अल्पकालिक होती है। समय-समय पर चलाए जाने वाले अतिक्रमण हटाओ अभियान कुछ दिनों के लिए दृश्य परिवर्तन अवश्य लाते हैं, लेकिन स्थायी सुधार नहीं कर पाते। इसका एक प्रमुख कारण राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव है, क्योंकि अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई अक्सर स्थानीय स्तर पर विरोध और दबाव का कारण बनती है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न एजेंसियों के बीच समन्वय की कमी भी एक बड़ी बाधा है, जहाँ सड़क, यातायात, नगर नियोजन और पुलिस विभाग अलग-अलग काम करते हैं, लेकिन साझा रणनीति का अभाव रहता है। यह संस्थागत विफलता फुटपाथों की दुर्दशा को स्थायी बना देती है।

फुटपाथों की गुणवत्ता और डिजाइन भी उतनी ही गंभीर समस्या है। भारतीय सड़क कांग्रेस (IRC) द्वारा जारी दिशानिर्देश स्पष्ट रूप से बताते हैं कि शहरी सड़कों पर फुटपाथों की न्यूनतम चौड़ाई, समतल सतह, बाधा-रहित मार्ग और दिव्यांगजन के लिए सुगम डिजाइन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। लेकिन जमीनी स्तर पर इन मानकों का पालन अपवाद के रूप में ही देखने को मिलता है। कई शहरों में फुटपाथ बीच-बीच में टूट जाते हैं, कहीं बिजली के खंभे या पेड़ रास्ता रोक लेते हैं, तो कहीं ऊँचाई और ढलान इतनी असमान होती है कि पैदल चलना लगभग असंभव हो जाता है। इस प्रकार की अव्यवस्थित संरचना पैदल यात्रियों को सड़क पर उतरने के लिए मजबूर करती है, जिससे दुर्घटनाओं का खतरा कई गुना बढ़ जाता है।

इस समस्या का एक महत्वपूर्ण आयाम सामाजिक न्याय से भी जुड़ा हुआ है। पैदल चलने वाले लोग प्रायः समाज के वे वर्ग होते हैं, जिनके पास निजी वाहन नहीं होते—जैसे मजदूर, छात्र, बुजुर्ग, महिलाएँ और निम्न आय वर्ग। जब फुटपाथ सुरक्षित नहीं होते, तो इसका सबसे अधिक प्रभाव इन्हीं वर्गों पर पड़ता है। इस दृष्टि से फुटपाथों का अभाव केवल एक भौतिक कमी नहीं, बल्कि शहरी असमानता का प्रत्यक्ष उदाहरण है। संयुक्त राष्ट्र के "सतत विकास लक्ष्य" विशेष रूप से लक्ष्य 11 (सतत शहर एवं समुदाय) में सुरक्षित, समावेशी और सुलभ सार्वजनिक स्थानों की आवश्यकता पर बल दिया गया है। भारत ने इन लक्ष्यों को अपनाया है, लेकिन फुटपाथों की वर्तमान स्थिति यह संकेत देती है कि इन लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में अभी लंबा रास्ता तय करना बाकी है।

अंतरराष्ट्रीय अनुभव यह दिखाते हैं कि यदि नीति-निर्माण में पैदल यात्रियों को प्राथमिकता दी जाए, तो शहरी जीवन की गुणवत्ता में व्यापक सुधार संभव है। विश्व बैंक और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के अध्ययन यह बताते हैं कि जिन शहरों में पैदल और साइकिल आधारित परिवहन को बढ़ावा दिया गया है, वहाँ न केवल सड़क दुर्घटनाओं में कमी आई है, बल्कि प्रदूषण, ट्रैफिक जाम और सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएँ भी कम हुई हैं। इसके विपरीत, भारत के अधिकांश शहर अभी भी वाहन-केंद्रित विकास मॉडल पर आधारित हैं, जहाँ सड़कों का विस्तार तो होता है, लेकिन फुटपाथों को या तो नजरअंदाज किया जाता है या बाद में जोड़ने की कोशिश की जाती है, जो अक्सर असफल रहती है।

समाधान की दिशा में सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता दृष्टिकोण में बदलाव की है। फुटपाथों को 'सप्लीमेंटरी' नहीं, बल्कि 'प्राथमिक' अवसंरचना के रूप में देखा जाना चाहिए। प्रत्येक नई सड़क परियोजना में फुटपाथों को अनिवार्य घटक बनाया जाए और उनके लिए अलग से बजट और समयसीमा तय की जाए। इसके साथ ही, अतिक्रमण के समाधान के लिए केवल दमनात्मक कार्रवाई पर्याप्त नहीं होगी, बल्कि समावेशी नीति की आवश्यकता है, जिसमें स्ट्रीट वेंडर्स के लिए व्यवस्थित और कानूनी स्थान उपलब्ध कराए जाएँ। "स्ट्रीट वेंडर्स ऐक्ट 2014" का प्रभावी क्रियान्वयन इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, बशर्ते इसे गंभीरता से लागू किया जाए।

अंततः, फुटपाथों का प्रश्न केवल शहरी नियोजन या यातायात प्रबंधन का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह नागरिक अधिकारों, गरिमा और लोकतांत्रिक समानता से जुड़ा हुआ विषय है। जब कोई नागरिक अपने ही शहर में सुरक्षित और सम्मानजनक तरीके से पैदल नहीं चल सकता, तो यह केवल प्रशासनिक विफलता नहीं, बल्कि शासन के मूल उद्देश्यों पर भी प्रश्नचिह्न है। 2026 के इस समय में, जब भारत 'स्मार्ट सिटी', 'अमृत योजना' और सतत विकास की बात कर रहा है, तब यह आवश्यक है कि विकास की परिभाषा को पुनः परिभाषित किया जाए। सड़कों की चौड़ाई और वाहनों की गति से आगे बढ़कर, यह सुनिश्चित करना होगा कि हर व्यक्ति—चाहे वह पैदल हो—सुरक्षित, सुलभ और सम्मानजनक तरीके से शहर में चल सके। फुटपाथों की वापसी दरअसल शहरों को अधिक मानवीय बनाने की दिशा में पहला और अनिवार्य कदम है, और जब तक प्रशासन इस सत्य को स्वीकार नहीं करता, तब तक अतिक्रमण और अव्यवस्था की यह कहानी यूँ ही दोहराई जाती रहेगी।

डॉ. शैलेश शुक्ला
सलाहकार संपादक, नई दुनिया

दिल्ली में FOB सुधारने की तैयारी, 8 नए फुट ओवर ब्रिज बनेंगे; 100 से ज्यादा के मेंटनेंस में कॉरपोरेट की एंट्री

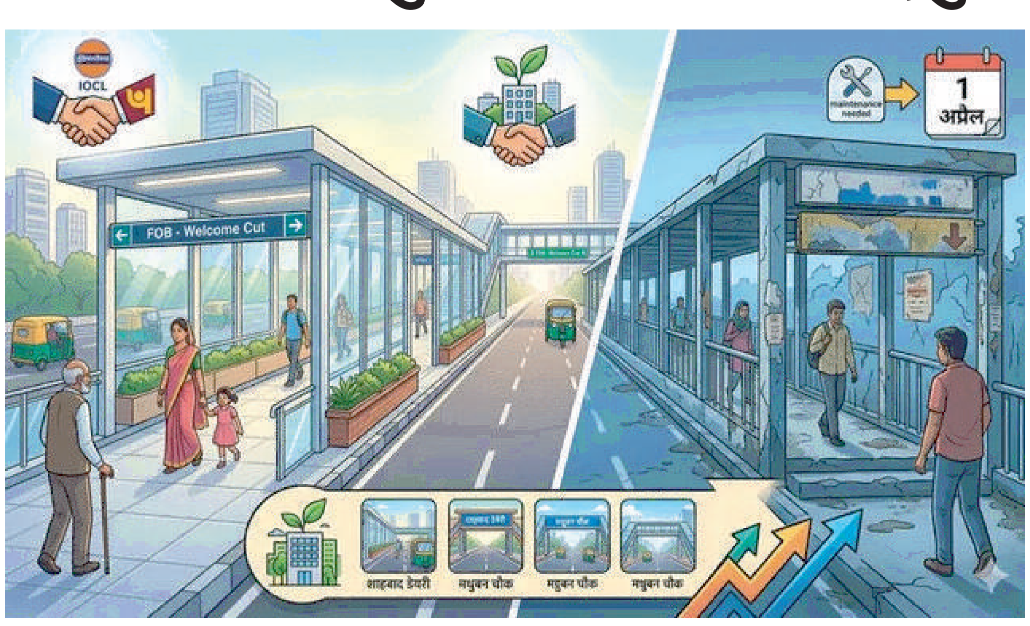

दिल्ली में अगले वित्त वर्ष से फुट ओवर ब्रिज (एफओबी) की स्थिति सुधरने की उम्मीद है। सरकार नए एफओबी बनाने के साथ-साथ पुराने पुलों के रखरखाव के लिए कॉर्पोरेट घरानों, जैसे इंडियन ऑयल, की मदद ले रही है।

नई दिल्ली। एक अप्रैल से शुरू होने जा रहे अगले वित्त वर्ष में दिल्ली में फुट ओवर ब्रिज (एफओबी) की दशा सुधरने की उम्मीद जगी है। एक तरफ जहां सरकार ने नए फुट ओवर ब्रिज बनाने के लिए बजट में प्रविधान किया है, वहीं पुराने फुटओवर ब्रिज की दशा सुधारने के लिए भी विभिन्न कॉरपोरेट हाउस की मदद से मदद लेने की रणनीति में सफलता पाई है।

इंडियन आयल जैसी कंपनियों से सरकार ने इसके लिए करार किया है। लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों कहना है इसके लिए प्रक्रिया चल रही है और आने वाले समय में जल्द ही इस मामले में आगे की कार्रवाई शुरू होगी।

बता दें कि दिल्ली सरकार ने शहर के आठ स्थानों पर फुटओवर ब्रिज (एफओबी) बनाने की कुछ माह पहले मंजूरी दे दी है। इसे लेकर फुटओवर ब्रिज, सबवे कमेटी की बैठक में इन फुटओवर ब्रिज को लेकर आ रही तकनीकी अड़चनों पर चर्चा की गई थी और इन परियोजनाओं को आगे बढ़ाने पर विचार हुआ था।

इस स्थानों पर बनेंगे फुटओवर ब्रिज

इन स्थानों में मधुबन चौक, वेलकम-कट (जीटी रोड), शाहबाद डेयरी, बेर सराय मार्केट, लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, ओखला सब्जी मंडी, जनकपुरी जीवन पार्क बस स्टैंड और माता चानन देवी अस्पताल शामिल हैं। निरीक्षण समिति की सिफारिशों के आधार पर समिति ने प्रस्तावित स्थान पर एफओबी के निर्माण को मंजूरी दे दी है।

यहां पर फुटओवर ब्रिज बनाए जाने के सुझाव मिले

आदर्श नगर में दो स्थान, त्रिलोकपुरी में चार स्थान, महरौली में 10 स्थान, नरेला में दो स्थान, कृष्णा नगर में तीन स्थान, बाबरपुर में एक स्थान, मोती नगर में चार स्थान, विश्वास नगर में एक स्थान पर फुटओवर ब्रिज बनाने का प्रस्ताव मिला है।

वहीं जनकपुरी में पांच स्थान, गांधीनगर में एक स्थान, देवली में दो स्थान, नांगलोई में एक स्थान, सीमापुरी में दो स्थान, बवाना में आठ, नरेला में छह स्थान और गोकुलपुर विधानसभा क्षेत्र में एक स्थान पर फुटओवर ब्रिज बनाने का प्रस्ताव सरकार को मिला है।

वहीं पूर्वी दिल्ली से सांसद व केंद्रीय राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा ने अपने लोकसभा क्षेत्र में चार स्थानों पर और उत्तरी पूर्वी जिला से सांसद मनोज तिवारी ने अपने लोकसभा क्षेत्र में एक स्थान पर फुटओवर ब्रिज बनाए जाने का प्रस्ताव दिया है।

कारपोरेट कंपनियां गोद लेंगी एफओबी

उधर, दिल्ली सरकार ने लोक निर्माण विभाग के अंतर्गत आने वाले 100 से अधिक फुट ओवर ब्रिज की स्थिति सुधारने और रखरखाव के लिए कुछ के लिए कॉरपोरेट कंपनियों को इन्हें गोद लेने की योजना पर काम शुरू किया है।

इस नीति के तहत, निजी फर्मों को इन संरचनाओं के रख-रखाव, सुंदर्यीकरण और सफाई के बदले विज्ञापन अधिकार दिए जाएंगे। जिससे सरकार की आय भी बढ़ेगी।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html |
tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार : "सीसीटीवी सिस्टम में अनधिकृत रिमोट एक्सेस बेहद खतरनाक"

पिंकी कुंडू

सीसीटीवी सिस्टम में अनधिकृत रिमोट एक्सेस एक बढ़ता हुआ खतरा है, जो संवेदनशील निगरानी फीड्स को हैकर्स, विदेशी तत्वों और साइबर अपराधियों के सामने उजागर करता है। कमजोर प्रमाणीकरण, अप्रयुक्त फर्मवेयर और विदेशी-होस्टेड सॉफ़्टवेयर स्टैक इन प्रणालियों को असुरक्षित बनाते हैं। इसी कारण भारत ने मानकों को सख्त किया है और स्थानीय परीक्षण व प्रमाणन को अनिवार्य किया है।

भारत ने सीसीटीवी सुरक्षा मानकों को कड़ा कर दिया है ताकि अनधिकृत रिमोट एक्सेस रोका जा सके। माननीय मंत्री श्री जितिन प्रसाद ने घोषणा की कि अब 500 से अधिक मॉडल नए Essential Requirements (ERs) के तहत प्रमाणित हैं। इस कदम से स्थानीय परीक्षण, हार्डवेयर पारदर्शिता और Make in India प्रणालियों को प्राथमिकता दी गई है, जिससे खरीद प्रक्रिया बदली है और घरेलू निर्माताओं को बढ़ावा मिला है।

सीसीटीवी सिस्टम की सामान्य कमजोरियाँ

1. कमजोर या डिफ़ॉल्ट पासवर्ड

o कई कैमरे फैक्ट्री-सेट क्रेडेंशियल्स जैसे "admin/admin" के साथ आते हैं, जिन्हें ब्रूट-फोर्स हमलों से आसानी से निशाना बनाया जा सकता है।

2. अप्रयुक्त फर्मवेयर

o पुराने ऑपरेटिंग सिस्टम और कैमरा सॉफ़्टवेयर हमलावरों के लिए खुले बग छोड़ देते हैं।

3. विदेशी क्लाउड होस्टिंग

o डेटा विदेशी सर्वरों से होकर गुजरता है, जिससे जासूसी और गोपनीयता संबंधी चिंताएँ बढ़ती हैं।

4. ओपन पोर्ट्स और असुरक्षित प्रोटोकॉल

o Telnet या असुरक्षित HTTP का उपयोग रिमोट टेकओवर और वीडियो फीड इंटरसेप्शन की अनुमति देता है।

5. खराब यूज़र मैनेजमेंट

o उचित ऑडिट लॉग्स के बिना कई अकाउंट्स अंदरूनी दुरुपयोग या अनधिकृत एक्सेस को सक्षम करते हैं।

नज़रअंदाज़ करने पर जोखिम

- नागरिक निगरानी डेटा का उल्लंघन।
- कानून प्रवर्तन और परिवहन केंद्रों में परिचालन बाधा।
- सीसीटीवी सिस्टम सुरक्षित न करने पर कानूनी जिम्मेदारी।
- विदेशी-होस्टेड सिस्टम का जासूसी के लिए दुरुपयोग होने पर भू-राजनीतिक जोखिम।

नए सीसीटीवी सुरक्षा मानकों की मुख्य बातें

- अनिवार्य Essential Requirements (ERs):

o सीसीटीवी सिस्टम को चिपसेट जैसे महत्वपूर्ण घटकों की उत्पत्ति का दस्तावेज़ीकरण करना होगा।

o उपकरणों को अनधिकृत रिमोट एक्सेस रोकने के लिए भेद्यता आकलन से गुजरना होगा।

o परीक्षण भारत में मान्यता प्राप्त लैब्स में किया जाना चाहिए।

- **प्रमाणित मॉडल:**

o वर्तमान में 507 सीसीटीवी मॉडल ERs का पालन करते हैं।

o गैर-अनुपालन मॉडल सरकारी खरीद से बाहर हैं।

- **खरीद प्रतिबंध:**

o सरकारी विभाग ER मानकों को पूरा न करने वाले उपकरण नहीं खरीद सकते।

o सभी मंत्रालयों को सीसीटीवी नेटवर्क को साइबर खतरों से सुरक्षित करने की सलाह दी गई है।

नीति और उद्योग पर प्रभाव

- सार्वजनिक खरीद प्राथमिकता (2017 आदेश):

o खरीद संस्थाओं को स्थानीय रूप से निर्मित वीडियो निगरानी प्रणालियों को प्राथमिकता देनी होगी।

o इससे चीनी घटकों पर निर्भरता कम होती है और सॉफ़्टवेयर स्टैक भारत में होस्ट किए जाते हैं।

- **परीक्षण और प्रमाणन:**

o MeitY के तहत STQC अनुपालन को मान्य करता है।

o निर्माताओं को BIS के साथ पंजीकरण करना अनिवार्य है।

कागज नहीं, अब डिजिटल हेल्थ वॉलेट के इस्तेमाल को बढ़ाने पर जोरए डब्ल्यूएचओ की नई पहल

पुनीत उपाध्याय

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डबल्यूएचओ) और एलायंस फॉर हेल्थ पॉलिसी एंड सिस्टम्स रिसर्च ने टेमासेक फाउंडेशन के साथ मिलकर एक नई तीन साल की पहल शुरू की है। इसका मकसद एसोसिएशन ऑफ साउथ ईस्ट एशियन नेशंस (एसियान) के सदस्य देशों को कागज़ पर आधारित हेल्थ रिकॉर्ड से हटकर सुरक्षितए आपस में जुड़ने वाले डिजिटल हेल्थ वॉलेट ; (डीएचडल्यू) अपनाने में मदद करना है। इस प्रोग्राम का मकसद राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणालियों को मज़बूत करना, देखभाल की निरंतरता को बेहतर बनाना और यह पक्का करना है कि लोगों के पास अपनी ज़रूरी स्वास्थ्य जानकारी तक भरोसेमंद और कहीं भी इस्तेमाल हो सकने वाली पहुंच हो। टेमासेक फाउंडेशन में स्वास्थ्य और वेल.बीइंग के प्रमुख की किर्क चुएन के अनुसार कोविड महामारी ने दिखाया कि हेल्थ रिकॉर्ड का भरोसेमंद, वेरिफ़ाई करने लायक होना और लोगों के साथ सीमाओं के पार भी जा सकना कितना ज़रूरी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ अपनी पार्टनरशिप के ज़रिए टेमासेक फाउंडेशन उन देशों की मदद करने की उम्मीद करता है जो बिखरे हुए कागज़ी रिकॉर्ड से हटकर सुरक्षित डिजिटल हेल्थ वॉलेट अपनाना चाहते हैं जिन्हें लोग जहां भी जाएं अपने साथ ले जा सकें।

एसियान के कुछ सदस्य देशों में इस तरीके को पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर आज़माकर यह दिखाना है कि भरोसेमंद डिजिटल टूल कैसे स्वास्थ्य प्रणालियों को मज़बूत कर सकते हैं। देखभाल की निरंतरता को बेहतर बना सकते हैं। अगर यह कोशिश कामयाब होती है तो यह वैश्विक डिजिटल स्वास्थ्य मानकों को ऐसे व्यावहारिक समाधानों में बदलने में मदद कर सकती है जिनसे इस पूरे क्षेत्र के समुदायों को फ़ायदा हो सकता है। यह पहल कोविड महामारी से मिले सबकों पर आधारित है जिसने भरोसेमंद और वेरिफ़ाई करने लायक डिजिटल स्वास्थ्य दस्तावेज़ों की तत्काल ज़रूरत को दिखाया था।

यह अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य विनियमों (आईएचआर 2025) के भी अनुरूप है जो विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त डिजिटल स्वास्थ्य प्रमाणपत्रों की मांग करते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन में डेटाए डिजिटल स्वास्थ्य एनालिटिक्स और एआई विभाग के निदेशक डॉण एलेन लैब्रिक के अनुसार डिजिटल हेल्थ वॉलेट सिर्फ़ एक तकनीकी अपग्रेड से कहीं ज़्यादा हैं। वे भरोसेमंद, लोगों पर केंद्रित स्वास्थ्य प्रणालिया बनाने की एक प्रतिबद्धता हैं। देशों को सुरक्षित, इंटरऑपरेबल समाधान अपनाने में सहायता देकर हम यह सुनिश्चित करते हैं कि व्यक्ति अपनी ज़रूरी स्वास्थ्य जानकारी आत्मविश्वास और गरिमा के साथ अपने पास रख सकें। यह साझेदारी हमारे इस साझा विश्वास को दर्शाती है कि डिजिटल बदलाव को राष्ट्रीय क्षमता को मज़बूत करना चाहिए, समानता को बनाए रखना चाहिए और लचीली स्वास्थ्य प्रणालियों के लिए एक नींव प्रदान करनी चाहिए। एलायंस फॉर हेल्थ पॉलिसी एंड सिस्टम्स रिसर्च के कार्यकारी निदेशक डॉ. कुमानन रसनथन बताते हैं कि डिजिटल स्वास्थ्य हस्तक्षेप तभी वास्तविक समाधान बन पाते हैं जब उन्हें स्थानीय वास्तविकताओं की सूक्ष्म समझ के आधार पर मौजूदा स्वास्थ्य प्रणालियों में सफलतापूर्वक एकीकृत किया जाता है। यह पहल वैश्विक स्तर पर मार्गदर्शन भी प्रदान करेगी ताकि अन्य देश सुरक्षित और मानकों पर आधारित डिजिटल हेल्थ वॉलेट्स को अपना सकें। इस प्रकारए यह पहल पूरे क्षेत्र और उससे भी आगे अधिक मज़बूत और लचीली स्वास्थ्य प्रणालियों के निर्माण में अपना योगदान देगी।(अदिति फीचर्स)

पुनीत उपाध्याय

रोज करें एक्सरसाइज, Body के साथ Brain भी रहेगा फिट, Alzheimer's का खतरा होगा कम

अनन्या मिश्रा

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि व्यायाम करना हमारे शरीर के लिए बेहद फायदेमंद होता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि यह हमारे दिमाग को अल्जाइमर जैसी गंभीर बीमारियों से बचा सकता है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि व्यायाम करना हमारे शरीर के लिए बेहद फायदेमंद होता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि यह हमारे दिमाग को अल्जाइमर जैसी गंभीर बीमारियों से बचा सकता है। बता दें कि शोधकर्ताओं ने एक नई जैविक प्रक्रिया की पहचान की है, जिसमें यह पूरी तरह से साफ कर दिया गया है कि शारीरिक एक्टिविटी से हमारे सोचने और याद रखने की क्षमता में सुधार क्यों होता है। यह शोध बताता है कि व्यायाम सिर्फ बॉडी ही नहीं बल्कि दिमाग को जवां बनाए रखता है।

उम्र के साथ कमजोर होता है दिमाग

हमारे मस्तिष्क की सुरक्षा के लिए एक खास परत होती है, जिसको ब्लड ब्रेन बैरियर कहा जाता है। यह ब्लड वाहिकाओं का एक जटिल जाल है, जो सामान्य तौर पर खून में मौजूद हानिकारक पदार्थों को दिमाग में जाने से रोकता है।

लेकिन जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है, यह सुरक्षा कवच कमजोर पड़ने लगता है और इसमें रिसाव होने लगता है। इस रिसाव की वजह से खून से हानिकारक प्रोटीन मस्तिष्क के ऊतकों में आसानी से प्रवेश कर जाते हैं। यह हानिकारक प्रोटीन दिमाग में सूजन पैदा करते हैं। जोकि सीधे रूप में बौद्धिक क्षमता में गिरावट और अल्जाइमर जैसी बीमारियों से जुड़ा होता है।

मस्तिष्क की मरम्मत करता है व्यायाम

व्यायाम एक जादू की तरह काम करता है। शोध के मुताबिक फिजिकल एक्टिविटी मस्तिष्क के इस अंतर्निहित रक्षा तंत्र को मजबूत करती है। जब आप व्यायाम करते हैं, तो हमारा शरीर लिवर को एक खास एंजाइम छोड़ने के लिए प्रेरित करता है। यह एंजाइम उन हानिकारक प्रोटीनों को नष्ट कर देता है, जो दिमाग को नुकसान पहुंचाते हैं। वहीं व्यायाम मस्तिष्क की इस सुरक्षात्मक परत की मरम्मत करके दिमाग को तेज करता है। इससे बढ़ती उम्र के साथ दिमाग के कमजोर होने का प्रोसेस भी धीमा हो जाता है।

भविष्य के लिए उम्मीद

इस प्रोसेस को समझने के लिए शोधकर्ताओं ने चूहों पर अध्ययन किया। इसमें पाया गया कि जब शरीर में हानिकारक प्रोटीन की मात्रा को कम किया गया, तो चूहों के दिमाग की सूजन कम हो गई। उनकी याददाश्त में भी काफी सुधार हुआ। यह महत्वपूर्ण खोज है, क्योंकि इसके माध्यम से अल्जाइमर और उम्र के साथ होने वाली दिमागी समस्याओं के लिए नए और बेहतर उपचार ढूंढने में मदद मिल सकती है।

लिवर खराब होने से पहले नजर आने वाले लक्षण

पिंकी कुंडू

हमारे शरीर में किसी भी बीमारी की शुरुआत अचानक नहीं होती. बीमारी होने से पहले शरीर बार-बार इसके संकेत देता है. अगर समय रहते इन संकेतों को पहचान लिया जाए तो बीमारी से बचा जा सकता है. ऐसे ही लिवर भी खराब होने से पहले कई तरह के लक्षण दिखाई देते हैं. आज हम आपको आपके पैरों में दिखने वाले वे 7 लक्षण बताएंगे, जो लिवर डैमेज होने का संकेत हो सकते हैं. समय रहते डॉक्टर को दिखाने से बड़ी बीमारी से बचा जा सकता है.

लिवर और पैरों का संबंध लिवर हमारे शरीर का एक बेहद महत्तवपूर्ण अंग है, लेकिन जब लिवर ठीक तरह से काम नहीं करता तो इसके कुछ संकेत पैरों में दिखाई देते है, जिसे आमतौर पर पैरों में होने वाले बदलावों को मामूली बात मानकर नजरअंदाज करना आसान है. हम सोचते है कि शायद यह खराब जूते पहनने या लंबे समय तक खड़े रहने के कारण हो सकता है, लेकिन कभी-कभी, ये बदलाव आंतरिक समस्या पैदा कर सकते हैं. विशेष रूप से लिवर स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं को, नजरअंदाज नहीं करना चाहिए बल्कि फौरन डॉक्टर के पास जाना चाहिए.

इन लक्षणों को नजरअंदाज न करें:-

पैरों में अचानक सूजन आना: अगर आपके तलवों में अचानक सूजन दिखाई देने लगे तो यह लिवर की समस्या का संकेत हो सकता है. लिवर सही तरीके से काम न करने पर शरीर में तरल पदार्थ जमा होने लगता है जिससे पैरों में सूजन आ जाती है.

तलवों में ज्यादा खुजली होना: जब लिवर ठीक से काम नहीं करता तो शरीर में कुछ पदार्थ जमा हो जाते हैं, जिससे त्वचा में खुजली होने लगती है.

पैरों का रंग बदलना: अगर पैरों की त्वचा का रंग पीला, गहरा या असामान्य दिखने लगे तो इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए. कई बार यह शरीर में बिलीरुबिन बढ़ने का संकेत हो सकता है.

नसें ज्यादा उभरना: कभी कभी पैरों की नसें ज्यादा उभरी हुई दिखाई देने लगती हैं और इसके साथ सूजन और दर्द भी हो तो एक तरह से ये भी लिवर से जुड़ी समस्याओं का एक संकेत हो सकता है.

लगातार दर्द या भारीपन होना: यह भी शरीर के अंदर किसी समस्या की ओर इशारा करता है. जब पैरों में लगातार दर्द, भारीपन या थकान महसूस हो रही हो तो यह भी लिवर की बीमारी का एक संकेत हो सकता है.

पैरों में हद से ज्यादा जलन होना: जब यह समस्या लंबे समय तक बनी रहे तो यह भी लिवर की खराबी का एक संकेत हो सकता है. कई लोगों को पैरों के तलवों में जलन या गर्माहट महसूस होने लगती है.

चमड़ी का बहुत ज्यादा सूखना: अगर पैरों की चमड़ी बहुत ज्यादा सूखी या फटने लगे तो यह भी किसी गड़बड़ी का संकेत हो सकता है.

अल्सर

पिंकी कुंडू

अल्सर का शाब्दिक अर्थ होता है – घाव, हाइपर एसिडिटी होना अल्सर का प्रथम चरण हैं, कभी भी एसिडिटी को इग्नोर ना करे। यदि आपको बार-बार या लगातार आमाशय या पेट में दर्द हो तो अपने चिकत्सक की सलाह अवश्य लें क्योंकि अक्सर यही अल्सर के लक्षण होते हैं। अन्य लक्षणों में मितली आना, उल्टी आना, गैस बनना, पेट फूलना, भूख न लगना और वजन में गिरावट शामिल हैं।

यह शरीर के भीतर कहीं भी हो सकता है; जैसे – मुंह, आमाशय, आंतों आदि में। परन्तु अल्सर शब्द का प्रयोग प्रायः आंतों में घाव या फोड़े के लिए किया जाता है। यह एक घातक रोग है, लेकिन उचित आहार से अल्सर एक-दो सप्ताह में ठीक हो सकता है

अधिक मात्रा में चाय, कॉफी, शराब, खट्टे व गरम पदार्थ, तीखे तथा जलन पैदा करने वाली चीजें, मसाले वाली वस्तुएं आदि खाने से प्रायः अल्सर हो जाता है। इसके अलावा अम्लयुक्त भोजन, अधिक चिन्ता, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, कार्यभार का दबाव, शीघ्र काम निपटाने का तनाव, बेचैनी आदि से भी अल्सर बन जाता है। पेप्टिक अल्सर में आमाशय तथा पक्वाशय में घाव हो जाते हैं। धीरे-धीरे ऊतकों को भी हानि पहुंचनी शुरू हो जाती है। इसके द्वारा पाचक रसों की क्रिया ठीक प्रकार से नहीं हो पाती। फिर वहां फोड़ा बन जाता है।

पेट में हर समय जलन होती रहती है। खट्टी-खट्टी डकारें आती हैं। सिर चकराता है और खाया-पिया वमन के द्वारा निकल जाता है। पित्त जल्दी-जल्दी बढ़ता है। भोजन में अरुचि हो जाती है। कब्ज रहता है। जब रोग बढ़ जाता है तो मल के साथ खून आना शुरू हो जाता है। पेट की जलन छाती तक बढ़ जाती है। शरीर कमजोर हो जाता है और मन बुझा-बुझा सा रहता है। रोगी चिड़चिड़ा हो जाता है। वह बात-बात पर क्रोध प्रकट करने लगता है।

अगर अल्सर का समय पर इलाज न करे तो बड़ा रूप ले सकता है। अल्सर कई प्रकार का होता है

1. अमाशय का अल्सर,
2. पेप्टिक अल्सर या
3. गैस्ट्रिक अल्सर।

अल्सर उस समय बनते हैं जब खाने को पचाने वाला अम्ल अमाशय की दीवार को क्षति पहुंचाता है, ये एसिड इतना खतरनाक होता हैं के इसकी तीव्रता आप इस से लगा सकते हैं के पेट में बनने वाला ये एसिड लोहे के ब्लेड को भी गलने की क्षमता रखता हैं। पोषण की कमी, तनाव और लाइफ-स्टाइल को अल्सर का प्रमुख कारण माना जाता था।

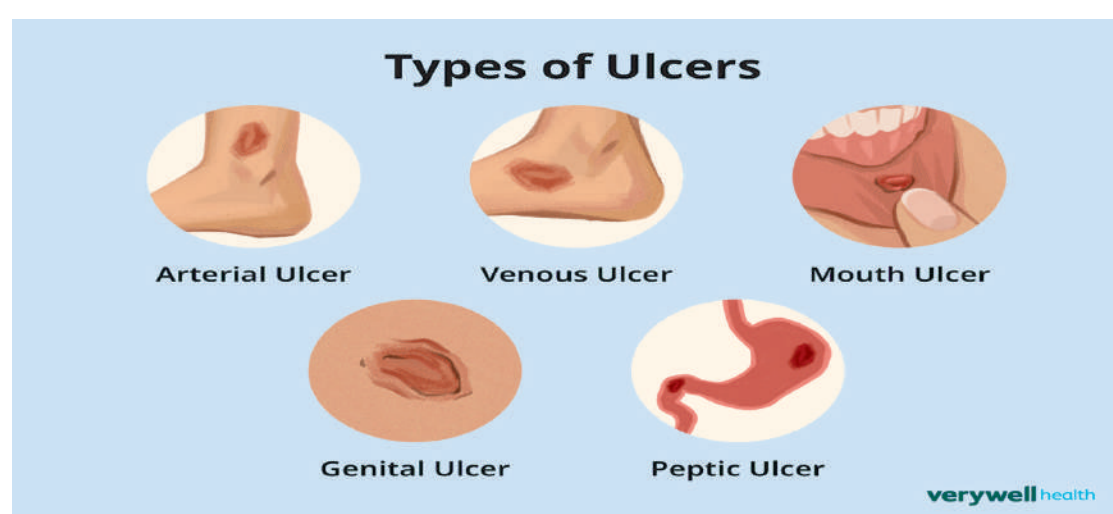

पोहा अल्सर के लिए बहुत फायदेमंद घरेलू नुस्खा है, इसे बिटन राइस भी कहते हैं। पोहा और सौंफ को बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बना लीजिए, 20 ग्राम चूर्ण को 2 लीटर पानी में सुबह घोलकर रखिए, इसे रात तक पूरा पी जाएं। यह घोल नियमित रूप से सुबह तैयार करके दोपहर बाद या शाम से पीना शुरू कर दें। इस घोल को 24 घंटे में समाप्त कर देना है, अल्सर में आराम मिलेगा।

पत्ता गोभी और गाजर को बराबर मात्रा में लेकर जूस बना लीजिए, इस जूस को सुबह-शाम एक-एक कप पीने से पेप्टिक अल्सर के मरीजों को आराम मिलता है।

अल्सर के मरीजों के लिए गाय के दूध से बने घी का इस्तेमाल करना फायदेमंद होता है।

गाय के दूध में एक चम्मच हल्दी डाल कर नित्य पीने से 3 से 6 महीने में कैसा भी अलसर हो, सही होते देखा गया हैं।

अल्सर के मरीजों को बादाम का सेवन करना चाहिए, बादाम पीसकर इसका दूध बना लीजिए, इसे सुबह-शाम पीने से अल्सर ठीक हो जाता है।

सहजन (ड्रम स्टिक) के पत्ते को पीसकर दही के साथ पेस्ट बनाकर लें। इस पेस्ट का सेवन दिन में एक बार करने से अल्सर में फायदा होता है।

आंतों का अल्सर होने पर हींग को पानी में मिलाकर इसका एनीमा देना चाहिये, इसके साथ ही रोगी को आसानी से पचने वाला खाना चाहिए।

अल्सर होने पर एक पाव ठंडे दूध में उतनी ही मात्रा में पानी मिलाकर देना चाहिए, इससे कुछ दिनों में आराम मिल जायेगा।

छाछ की पतली कढ़ी बनाकर रोगी को रोजाना देनी चाहिये, अल्सर में मक्की की रोटी और कढ़ी खानी चाहिए, यह बहुत आसानी से पच जाती है।

कच्चे केले की सब्जी बनाकर उसमें एक चुटकी हींग मिलाकर खाएं। यह अल्सर में बहुत फायदा करती है।

अत्यधिक रेशेदार ताजे फल और सब्जियों का सेवन करें जिससे कि अल्सर होने की सम्भावना कम की जा सके या उपस्थित अल्सर को ठीक किया जा सके।

मुलेठी बहुत गुणकारी औषधि है। मुलेठी के प्रयोग करने से न सिर्फ आमाशय के विकार बल्कि गैस्ट्रिक अल्सर के लिए फायदेमंद है। मुलेठी का चूर्ण ड्यूओडनल अल्सर के अपच, हाइपर एसिडिटी आदि पर लाभदायक प्रभाव डालता है। साथ ही अल्सर के घावों को भी तेजी से भरता है। यह मीठा होता है इसलिए इसे ज्येष्ठीमधु भी कहा जाता है। असली मुलेठी अंदर से पीली, रेशेदार एवं हल्की गंधवाली होती है। कोई भी समस्या न हो तो भी कभी-कभी मुलेठी का सेवन कर लेना चाहिए आँतों के अल्सर ,कैंसर का खतरा कम हो जाता है ।

पालक विभिन्न उदर रोगों में लाभ प्रद है। आमाशय के घाव छालेऔर आँतों के अल्सर में भी पालक का रस लाभ प्रद है। कच्चे पालक का रस आधा गिलास नित्य पीते रहने से कब्ज- नाश होता है। पायरिया रोग में कच्ची पालक खूब चबाकर खाना और पत्ते का रस पीना हितकर है

नारियल पानी बहुत बढ़िया हैं, आप इसको निरंतर हर रोज़ पीजिये।

सुबह खाली पेट तुलसी के 5 पत्ते खाए।

गेंहू के जवारों का रस अमृत सामान हैं, अलसर के रोगियों के लिए। रोज़ सुबह इसका सेवन करे, अधिक जानकारी के लिए हमारी ये पोस्ट ज़रूर पढ़े।

रात को सोने से पहले एक चम्मच अर्जुन की छाल को 250 मिली पानी में पकाये, इस में आधा चम्मच मुलेठी का चूर्ण भी डाल ले और आधा रहने पर इसको छान कर पी ले। ये महीने तक करे।

अलसर के लिए विशेष चूर्ण। आंवला 100 ग्राम, मिश्री 500 ग्राम, सौंफ 100 ग्राम, मुलेठी 100 ग्राम, हरड़ 50 ग्राम, अजवायन 50 ग्राम, धनिया 50 ग्राम, जीरा 50 ग्राम, हींग 5 ग्राम।

इन सब को मिक्स कर के एक चम्मच गाय के दूध से बनी हुयी दही की छाछ से नियमित सुबह और शाम को ले। 3 महीने निरंतर ले। आपको बहुत फायदा होगा।

मरीज को हर दो घंटे में कुछ न कुछ खाते रहना चाहिए।

मरीज को इनसे परहेज करना चाहिए।

कॉफी और कार्बोनेटेड पेय पदार्थों की संख्या सीमित करें या पूर्णतयः समाप्त कर दें। इन सभी पेय पदार्थों का आमाशय की अम्लीयता में तथा अल्सर के लक्षणों को गम्भीर बनाने में सहभागिता होती है।

अपने अल्सर पूर्णतयः ठीक होने तक शराब के सेवन न करें।

मैदे से बनी हुयी किसी भी वास्तु का सेवन न करे, फ़ास्ट फ़ूड या जंक फ़ूड गलती से भी न खाए।

अल्सर के रोगी को ऐसा आहार देना चाहिये जिससे पित्त न बने, कब्ज और अजीर्ण न होने पाये। इसके अलावा अल्सर के रोगी को अत्यधिक रेशेदार ताजे फल और सब्जियों का सेवन करना चाहिए, जिससे अल्सर को जल्दी ठीक किया जा सके।

अधिक मात्रा में चाय, कॉफी, शराब, खट्टे व गरम पदार्थ, तीखे तथा जलन पैदा करने वाली चीजें, मसाले वाली वस्तुएं आदि खाने से प्रायः अल्सर हो जाता है। इसके अलावा अम्लयुक्त भोजन, अधिक चिन्ता, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, कार्यभार का दबाव, शीघ्र काम निपटाने का तनाव, बेचैनी आदि से भी अल्सर बन जाता है। पेप्टिक अल्सर में आमाशय तथा पक्वाशय में घाव हो जाते हैं। धीरे-धीरे ऊतकों को भी हानि पहुंचनी शुरू हो जाती है। इसके द्वारा पाचक रसों की क्रिया ठीक प्रकार से नहीं हो पाती। फिर वहां फोड़ा बन जाता है।

हनुमानजी की पूजा सबसे जल्दी मनोकामनाएं पूर्ण करने वाली मानी गई

पिंकी कुंडू

शनिवार के दिन हनुमानजी को प्रसन्न करने के लिए विशेष उपाय करें तो कुछ ही समय में किस्मत चमक सकती है। ये खास उपाय आपकी हर मनोकामना पूरी कर सकते हैं और सभी कष्टों का निवारण कर सकते हैं।

1- शनिवार के दिन राम मंदिर में जाएं। हनुमान जी के मस्तक का सिंदूर दाहिने हाथ के अंगूठे से लेकर सीता माता के श्री रूप के श्री चरणों में लगा दें। मनोकामना पूरी करने के लिए प्रार्थना करें।

2 - शनिवार की सुबह स्नान करने के बाद बड़ के पेड़ का एक पत्ता तोड़ें और इसे साफ पानी से धो लें। अब इस पत्ते को कुछ देर हनुमानजी के सामने रखें। इसके बाद इस पर केसर से श्रीराम लिखें। अब इस पत्ते को अपने पर्स में रख लें। साल भर आपका पर्स पैसों से भरा रहेगा।

3- हनुमान जी की कृपा पाने के लिए शनिवार के दिन व्रत करके शाम के समय बूंदी का प्रसाद बांटने से भी पैसों की तंगी दूर हो जाती है।

4 - शनिवार के दिन हनुमान जी के मन्दिर में जाएं। उनके कंधों पर से सिन्दूर लाकर अपने कलेजे पर लगाएं। नजर का प्रभाव समाप्त होगा और समृद्धि के द्वार खुलेंगे।

5-शनिवार को शाम के समय हनुमान जी को केवड़े का इत्र व गुलाब की माला चढ़ाएं। हनुमान जी को खुश करने का यह सबसे सरल उपाय है।

6 - जीवन की समस्त समस्याओं के निवारण के लिए शनिवार की शाम हनुमान जी के मंदिर में जाएं और रामरक्षा स्त्रोत का पाठ करें।

7- शनिवार की शाम को हनुमान मंदिर में जाएं। एक सरसों के तेल का और एक शुद्ध घी का दीपक जलाएं। वहीं बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें। हनुमान जी की कृपा पाने का ये एक अचूक उपाय है।

8- शनिवार के दिन हनुमानजी के पैरों में फिटकरी रखें फिर जिन्हें बुरे सपने आते हों वे अपने सिरहाने इस फिटकरी को रखें। बुरे सपने नहीं आएंगे।

ॐ: पंचतत्व और सृष्टि का मूल बीज

पिंकी कुंडू

ॐ केवल एक अक्षर नहीं, बल्कि वह आदि ध्वनि है जो समस्त सृष्टि का आधार है। जब हम बीज अक्षरों की बात करते हैं, तो 'ॐ' उस मूल स्वरूप को दर्शाता है जिससे सब कुछ उत्पन्न और प्रकट हुआ है।

पंचतत्व और 'ॐ' का अंतर्संबंध

सृष्टि की प्रत्येक रचना—चाहे वह जीव-जंतु हों, दानव, मानव, देव, यक्ष या गंधर्व—सब इन्हीं पंचतत्वों की अभिव्यक्ति हैं। चूँकि यह संपूर्ण जगत पंचतत्वों की माया है, इसलिए 'ॐ' की साधना वास्तव में पंचतत्वों की ही साधना है। *मूल आधार: जिस साधक का यह एकाक्षर सिद्ध हो जाता है, उसके पांचों तत्व स्वतः ही सध जाते हैं।

बीज और गर्भ: 'ॐ' समस्त अक्षरों और मंत्रों का बीज है। यदि अन्य मंत्रों या बीजों में परिवर्तन किया जाए, तो वे विशिष्ट रूप से एक या दो तत्वों को साधने का कार्य करते हैं।

पूर्णता: इसके विपरीत, 'ॐ' साक्षात 'गर्भ' स्वरूप है। बीज होने के कारण इसमें समस्त तत्व समाहित हैं, अतः इसकी साधना से सभी तत्व एक साथ संतुलित और सिद्ध होने लगते हैं।

सार:

'ॐ' वह केंद्र बिंदु है जहाँ से विस्तार शुरू होता है और जहाँ अंत में सब विलीन हो जाता है। इसकी साधना साधक को प्रकृति के मूल घटकों (पंचतत्वों) पर विजय प्राप्त करने और पूर्णता की ओर अग्रसर होने का मार्ग प्रशस्त करती है।

33 कोटि (प्रकार) देवी-देवताओं की सूची:

पिंकी कुंडू

8 वसु (प्रकृति के संरक्षक): आप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास (ये पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल, अंतरिक्ष आदि के प्रतीक हैं)।

11 रुद्र (शिव के रूप): मनु, मन्यु, शिव, महत, ऋतुध्वज, महिनस, उम्रतेरस, काल, वामदेव, भव, और धृत-ध्वज (विनाश और पुनरुत्थान के देवता)।

12 आदित्य (सूर्य के रूप): अंशुमान, अर्यमन, इंद्र, त्वष्टा, धातु, पर्जन्य, पूषा, भग, मित्र, वरुण, वैवस्वत और विष्णु (सौरमंडल की 12 शक्तियाँ)।

2 अश्विनी कुमार (देवताओं के वैद्य): स्वास्थ्य और औषधियों के देवता (नासत्य और दस्र)।

जो लोग केवल फूलों से देवी को मनाते हैं....

पिंकी कुंडू

उन्हें क्या पता
शक्ति केवल कोमल नहीं होती —
वह प्रचंड भी होती है, संहारिणी भी, करुणामयी भी।
जब भीतर का अंधकार सीमा पार करता है,
तब माँ का उग्र स्वरूप प्रकट होता है।
वह भय नहीं देती
भय को ही भस्म कर देती है।
ॐ क्रीं कालिकायै नमः।

घोररूपिणी चामुण्डे, सर्वदुष्ट विनाशिनि।
भद्रकालि नमस्तुभ्यं, रक्ष रक्ष मम सर्वदा॥
जिसने एक बार "क्रीं" बीज को हृदय से जपा,
उसके जीवन से दुष्ट शक्तियाँ स्वयं दूर हो जाती हैं।
शक्ति को परखने वाले जल जाते हैं,
और समर्पित होने वाले तर जाते हैं।
जय माँ काली।
जय उग्र शक्ति।

देव और असुर दोनों के एक ही पिता, महर्षि कश्यप

पिंकी कुंडू

पौराणिक कथाओं के अनुसार, देव और असुर दोनों एक ही पिता, महर्षि कश्यप की संतानें हैं, जो सौतेले भाई थे। अदिति के पुत्र देव (आदित्य) कहलाए और दिति/दनु के पुत्र असुर (दैत्य/दानव)। देव धर्म, त्याग और प्रकाश के प्रतीक हैं, जबकि असुर शक्ति, भोग और अंधकार के प्रतीक माने जाते हैं।

देव और असुर के बीच का मुख्य अंतर और विवरण:

उत्पत्ति: दोनों प्रजापति कश्यप की संतानों में से हैं।

देव (Sur/Deva): अदिति के पुत्रों को आदित्य या देव कहा जाता है। ये परोपकारी और देवताओं के रूप में पूजे जाते हैं।

असुर (Asura/Daitya/Danava): दिति और दनु की संतानें क्रमशः दैत्य और दानव कहलाईं, जो बाद में असुर के रूप में जानी गईं।

*प्रकृति/स्वभाव: देवों का स्वभाव परोपकारी और नेक है, जबकि असुर अपनी अपार शक्ति का उपयोग अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए करते हैं।

*युद्ध: वेदों में सुरों (देवताओं) और असुरों के बीच निरंतर संघर्ष (युद्ध) का वर्णन है, जिसमें असुर कई बार विजयी भी हुए।

*गुरु: असुरों के गुरु भृगु पुत्र शुक्राचार्य थे, जो अत्यंत ज्ञानी माने जाते I

दीपक की लौ और नियति का खेल: राजा भद्राश्व की कथा!

पिंकी कुंडू

दिशाओं में फैला था। वे इतने प्रतापी और न्यायप्रिय थे कि उनके साम्राज्य को जगत में 'भद्राश्ववर्ष' के नाम से जाना जाने लगा। एक दिन उनके द्वार पर साक्षात महर्षि अगस्त्य का आगमन हुआ। मुनि के तेज से राजमहल आलोकित हो उठा। राजा ने नतमस्तक होकर उनका स्वागत किया और प्रार्थना की कि ऋषिवर कुछ समय महल में ही विश्राम करें।

अगस्त्य मुनि ने मुस्कुराते हुए कहा, ₹हे राजन! मैं यहाँ सात दिवस व्यतीत करूँगा।₹ राजा के आनंद की सीमा न रही। उन्होंने अपनी पटरानी कांतिमती और अन्य रानियों को आदेश दिया कि वे प्रतिदिन मुनि के दर्शन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।

रानी कांतिमती साधारण सुंदरी नहीं थीं। उनके मुखमंडल पर ऐसा ओज था मानो बारह सूर्य एक साथ उदित हो गए हों। जब वे प्रथम दिन मुनि के समक्ष आईं, तो अगस्त्य जी उन्हें देखते ही रह गए। उनके मुख से अनायास निकला, ₹राजन! तुम परम सौभाग्यशाली हो।₹

अगस्त्य मुनि जैसे जितेंद्रिय और शांत ऋषि की यह प्रतिक्रिया सबको अचंभित कर गई। लेकिन सिलसिला यहीं नहीं रुका:

* दूसरे दिन: रानी को देखते ही मुनि बोले, ₹हा! शोक! सारा संसार इस सत्य से वंचित रह गया।"

* तीसरे दिन: वे बुदबुदाए, ₹लोग उस गोविंद की माया नहीं जानते, जिसने मात्र एक क्षण की प्रसन्नता में इन्हें यह वैभव दे दिया।"

* चौथे दिन: मुनि ने भावुक होकर हाथ ऊपर उठाए और पुकारा, ₹हे जगन्नाथ! आपकी लीला अपरंपार है!"

* पांचवें और छठे दिन: वे स्वयं को और राजा को धन्य कहते रहे, मानो कोई गहरा राज उनकी आँखों के सामने तैर रहा हो।

सातवें दिन का दृश्य और मुनि का नृत्य

सातवें दिन तो मर्यादा की सीमा ही टूट गई। रानी को देखते ही मुनि अगस्त्य अचानक खिलखिलाकर हँसने लगे और चिल्लाए, ₹मूर्ख! राजा, रानी और सेवक सब मूर्ख हैं जो मेरी बात नहीं समझ रहे!₹ इतना कहकर वे सुध-बुध खोकर सभा के बीच नाचने लगे।

एक धीर-गंभीर महामुनि को इस तरह नृत्य करते देख राजा भद्राश्व दुविधा में पड़ गए। उन्होंने करबद्ध होकर पूछा, ₹भगवन! क्षमा करें, पर आपके इस व्यवहार का रहस्य क्या है? आप कभी संसार को वंचित बताते हैं, कभी हमें मूर्ख कहते हैं और आज यह नृत्य? कृपया मेरा संशय दूर करें।₹

पूर्वजन्म का रहस्य: एक छोटा सा कर्म, एक बड़ा प्रतिफल

मुनि अगस्त्य शांत हुए और गंभीर स्वर में बोले, "राजन! अपने इस वैभव के पीछे का कारण सुनो। पूर्वजन्म में तुम राजा नहीं, बल्कि हरिदत्त नामक एक धनी वैश्य के साधारण से 'दास' थे। यह रानी कांतिमती तब भी तुम्हारी पत्नी थी और उसी वैश्य के यहाँ 'दासी' थी।₹

राजा और रानी मंत्रमुग्ध होकर सुनने लगे। मुनि ने आगे कहा: ₹एक बार आश्विन मास की द्वादशी को उस वैश्य ने भगवान विष्णु के मंदिर में दीप-

दान का संकल्प लिया। उसने तुम्हें और कांतिमती को मंदिर की व्यवस्था हेतु साथ रखा। जब पूजा पूर्ण हुई, तो वैश्य ने तुम्हें एक ही जिम्मेदारी सौंपी—'इस दीपक की लौ बुझनी नहीं चाहिए।'"

मुनि बोले, "तुम दोनों ने उस पूरी रात पलक झपकाए बिना उस दीपक की रक्षा की। तेल कम हुआ तो तेल डाला, हवा चली तो आंचल की ओट दी। तुमने केवल उस जलते हुए दीप की रखवाली की थी, जिसे जलाया किसी और ने था और धन किसी और का था।"

अगस्त्य मुनि ने समझाया:

वैभव क्यों मिला? "राजन, केवल एक रात पराये दीपक की रक्षा करने के पुण्य से तुम आज महान राजा बने और तुम्हारी पत्नी को यह अलौकिक सौंदर्य और वैभव प्राप्त हुआ।₹

सब मूर्ख क्यों? ₹मैं इसलिए नाचा क्योंकि लोग सांसारिक सुखों के पीछे भागते हैं, पर उस विष्णु भक्ति के छोटे से दीप की महिमा को नहीं जानते। अगर रक्षा मात्र से इतना पुण्य मिलता है, तो जो स्वयं दीप प्रज्वलित करते हैं, उन्हें क्या कुछ प्राप्त नहीं होगा!"

स्वयं को धन्य क्यों कहा? "मैंने खुद को धन्य इसलिए कहा क्योंकि मुझे हर कण में श्रीहरि की लीला दिख रही है।₹ यह रहस्य जानकर राजा भद्राश्व की आंखों में आंसू आ गए। उन्हें समझ आया कि ईश्वर की भक्ति में किया गया छोटा सा छोटा कार्य भी कभी व्यर्थ नहीं जाता। उन्होंने मुनि से और रुकने का आग्रह किया, परंतु अगस्त्य मुनि ने उन्हें योग्य पुत्र का आशीर्वाद दिया और कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर पुष्कर के लिए प्रस्थान किया।

समाधान शिविर की हर शिकायत का प्राथमिकता से निपटान करें अधिकारी : डीसी

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने जिला स्तरीय समाधान शिविर में सुनी समस्याएं

झज्जर, 30 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे समाधान शिविर में प्राप्त हर शिकायत का यथाशीघ्र उचित निपटारा सुनिश्चित करें। समाधान शिविर में हर विभाग से संबंधित हर शिकायत का एक छत के नीचे तुरंत निपटारा करने का लक्ष्य रखा गया है।

डीसी सोमवार को लघु सचिवालय स्थित सभागार में आयोजित जिला स्तरीय समाधान शिविर में नागरिकों की समस्या सुन रहे थे। समाधान शिविर में लगभग कुल 8 समस्याएं दर्ज की गई हैं।

डीसी ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार जिला प्रशासन द्वारा हर सोमवार व वीरवार को सुबह 10 से 12 बजे तक जिला मुख्यालय एवं बहादुरगढ़, बेरी व बादली उपमंडल मुख्यालयों पर समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इन शिविरों के माध्यम से नागरिकों की समस्याओं का निपटान भी सुनिश्चित किया जा रहा है।

डीसी ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे समाधान शिविरों की शिकायतों का निपटारा करते समय संबंधित नागरिक से संवाद करें। अधिकारी नागरिक को शिकायत निपटारे के लिए विभाग द्वारा की जा रही कार्यवाही की जानकारी देकर संतुष्ट करें, ताकि शिकायत का स्थायी समाधान हो सके।

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, एसडीएम झज्जर रवि मीणा, एसीपी अखिल कुमार, डीआरओ मनवीर सिंह, डीडीपीओ निशा तंवर, एक्सईएन पीडब्ल्यूडी सुमित कुमार सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

बहादुरगढ़ में अवैध पीवीसी मार्केट और प्लास्टिक कचरे की डंपिंग के खिलाफ धारा 163 लागू आदेश तत्काल प्रभाव से लागू

परिवहन विशेष न्यूज

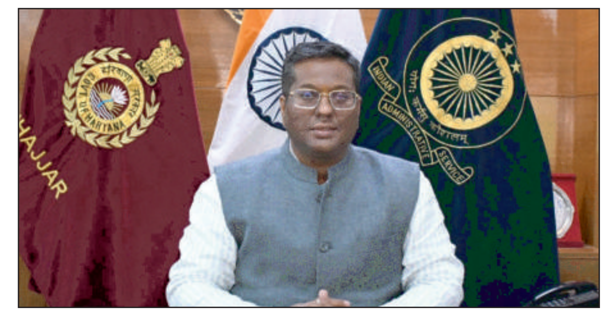

बहादुरगढ़, 30 मार्च। जिलाधीश स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 के तहत आदेश जारी करते हुए बहादुरगढ़ क्षेत्र में अवैध तरीके से प्लास्टिक कचरे की डंपिंग व अनलोडिंग पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। जारी आदेशों के अनुसार बहादुरगढ़ में अवैध पीवीसी बाजार के चलते प्लास्टिक कचरा अनधिकृत रूप से सार्वजनिक स्थानों व भूमि पर डंपिंग करने से वायु और जल प्रदूषण की स्थिति उत्पन्न हो रही है। यह जनस्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बनता जा रहा है और आमजन के जीवन की गुणवत्ता एवं शांति व्यवस्था को भी प्रभावित कर रहा है।

वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए आदेश आमजन के हित में पारित किया गया है। यह आदेश 31 मार्च 2026 से 29 मई 2026 तक प्रभावी रहेंगे। इन आदेशों के अनुपालन की जिम्मेदारी पुलिस विभाग, आरटीए, जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी, नगर परिषद बहादुरगढ़ के कार्यकारी अधिकारी तथा संबंधित खंड विकास एवं पंचायत अधिकारियों को सौंपी गई है। उल्लेखनीय है कि आदेशों के उल्लंघन पर संबंधित व्यक्ति या संस्था के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की धारा 223 के तहत कार्रवाई की जाएगी।

झज्जर में मत्स्य पालन की अपार संभावनाएं : डीसी

ग्राम स्तर पर जागरूकता बढ़ाकर किसानों को मत्स्य पालन से जोड़ने पर फोकस

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों की बैठक में मत्स्य विभाग से जुड़ी योजनाओं की समीक्षा

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 30 मार्च। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल की अध्यक्षता में सोमवार को जिला में मत्स्य पालन से जुड़ी योजनाओं को लेकर समीक्षा बैठक आयोजित की गई, जिसमें लो लाइन एरिया में मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए सम्बंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने कहा कि जिले में ऐसे क्षेत्र, जहां जलभराव की स्थिति बनी रहती है, वहां मत्स्य पालन की अपार संभावनाएं हैं। इन क्षेत्रों का बेहतर उपयोग करते हुए किसानों की आय में वृद्धि सुनिश्चित की जा सकती है।

बैठक में जिला मत्स्य अधिकारी अमित सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान में जिले में 1255 हेक्टेयर क्षेत्र में मत्स्य पालन किया जा रहा है तथा कुल 566 तालाब मौजूद हैं। चालू वित्त वर्ष के दौरान 13 हजार 913 टन मत्स्य उत्पादन हो चुका है। उन्होंने विभागीय योजनाओं की प्रगति और संभावित क्षेत्रों की जानकारी भी उपायुक्त के समक्ष प्रस्तुत की।

डीसी ने योजनाओं की समीक्षा करते हुए कहा कि झज्जर जिला मत्स्य पालन के क्षेत्र में प्रदेश में अग्रणी स्थान रखता है। राजधानी के निकट होने के कारण यहां मछली पालन व्यवसाय को और अधिक विकसित करने की आवश्यकता है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि किसानों को पारंपरिक खेती के साथ-साथ मत्स्य पालन के लिए प्रेरित किया जाए।

उन्होंने कहा कि मत्स्य विभाग किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन, प्रशिक्षण तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराए। गांव स्तर पर जागरूकता कैंप आयोजित कर किसानों को सब्सिडी, बीज, चारा, तालाब निर्माण, आधुनिक तकनीक और विपणन से संबंधित जानकारी दी जाए।

डीसी ने यह भी निर्देश दिए कि ग्राम पंचायतों से प्रस्ताव पारित कर जलभराव वाली भूमि पर योजनाबद्ध तरीके से मत्स्य पालन को बढ़ावा दिया जाए। उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र रोजगार सृजन का सशक्त माध्यम है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री सुशासन सहयोगी खुशी कौशल, डीडीपीओ निशा तंवर, मत्स्य अधिकारी अंजू रानी, सभी खंडों के बीडीपीओ उपस्थित थे।

रबी फसलों की खरीद की तैयारियां तेज : एसडीएम

एसडीएम रेणुका नांदल ने अधिकारियों के साथ माजरा डी स्थित अनाज मंडी का किया दौरा

बेरी, 30 मार्च। एसडीएम रेणुका नांदल ने सोमवार को माजरा डी स्थित अनाज मंडी का दौरा कर गेहूं खरीद को लेकर की जा रही तैयारियों की विस्तार से समीक्षा की। उन्होंने कहा कि एक अप्रैल से गेहूं की खरीद शुरू होने जा रही है। खरीद के दौरान किसानों को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होनी चाहिए और सभी व्यवस्थाएं समय रहते पूरी कर ली जाएं।

उन्होंने कहा कि खरीद को लेकर उपमंडल प्रशासन पूरी तरह से तैयार है। उन्होंने माजरा खरीद केंद्र पर साफ-सफाई, पेयजल, बैठने की व्यवस्था, शौचालय, बिजली और सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि प्रशासन का मुख्य उद्देश्य किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य दिलाना और खरीद प्रक्रिया को सरल व पारदर्शी बनाना है। इसके लिए सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य कर रहे हैं, ताकि रबी सीजन में किसानों को किसी प्रकार की दिक्कत का सामना न करना पड़े। इस अवसर पर संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

जिला में पेट्रोल, डीजल व एलपीजी गैस के लिए पर्याप्त स्टॉक : डीसी

उपायुक्त स्वप्निल रविन्द्र पाटिल का आह्वान-अफवाहों पर ध्यान न दें आमजन

- उपायुक्त स्वप्निल रविन्द्र पाटिल का आह्वान-अफवाहों पर ध्यान न दें आमजन
- जमाखोरी व कालाबाजारी पर होगी सख्त कार्रवाई, जरूरत के अनुसार ही लें ईंधन

झज्जर, 30 मार्च। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने कहा कि जिले में पेट्रोल, डीजल व एलपीजी गैस की आपूर्ति पूरी तरह सामान्य है और पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता सुनिश्चित की गई है। सप्लाई चैन सामान्य रूप से कार्य कर रही है। अनावश्यक रूप से स्टॉक करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

डीसी ने नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि वे केवल आवश्यकता के अनुरूप ही पेट्रोल, डीजल व एलपीजी गैस लें तथा किसी भी प्रकार की जमाखोरी से बचें। उन्होंने कहा कि अनावश्यक स्टॉक करना उचित नहीं है, इसलिए सभी नागरिक जिम्मेदारी का परिचय दें और जिला प्रशासन का सहयोग करें।

उन्होंने स्पष्ट किया कि घरेलू एलपीजी गैस का उपयोग केवल घरेलू कार्यों के लिए ही किया जाए। यदि कहीं भी घरेलू गैस का व्यावसायिक उपयोग पाया जाता है, तो संबंधित के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। साथ ही गैस एजेंसियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे मांग के अनुसार पर्याप्त स्टॉक बनाए रखें, ताकि उपभोक्ताओं को किसी प्रकार की परेशानी न हो।

डीसी ने कहा कि जिले में पेट्रोल पंपों व गैस एजेंसियों पर उपलब्धता की नियमित निगरानी की जा रही है। राशन डिपो व लेबर कैंटीनों में खाद्य आपूर्ति व्यवस्था को भी सुचारू बनाए रखने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि आमजन व श्रमिक वर्ग को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

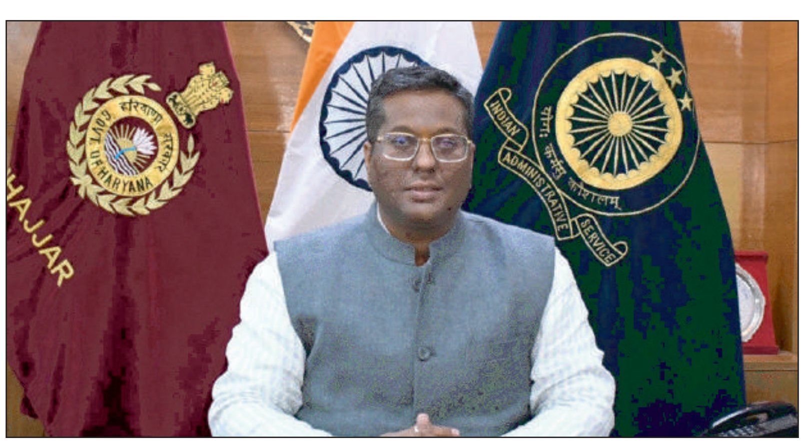

उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि पेट्रोल, डीजल व एलपीजी गैस की कालाबाजारी अथवा अवैध भंडारण किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इसके लिए संबंधित विभागों को विशेष निगरानी रखने व आवश्यकतानुसार कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं। डीसी ने कहा कि प्रशासन पूरी तरह सतर्क है और आमजन के सहयोग से ही व्यवस्था को सुचारू बनाए रखा जा सकता है।

- पब्लिक ट्रांसपोर्ट का करें अधिक प्रयोग

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि जहां तक संभव हो सार्वजनिक परिवहन जैसे बस व रेल सेवाओं का अधिक से अधिक उपयोग करें। इससे ईंधन की बचत के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण में भी सहयोग मिलेगा।

जिला में 26 गैस एजेंसी कार्यरत,पांच विशेष टीमों का गठन : डीएफएससी

- डीएफएससी राजेश्वर मुदगिल ने बताया कि कमर्शियल सिलेंडर मांग के अनुसार समिति के माध्यम से वितरित किए जा रहे हैं। जिला भर में 26 गैस एजेंसियां संचालित हैं, जो नियमित आपूर्ति सुनिश्चित कर रही हैं। एलपीजी गैस की कालाबाजारी व जमाखोरी पर रोक के लिए पांच विशेष टीमों का गठन किया गया है। जिले में 176 पेट्रोल पंप संचालित हैं, जबकि लगभग 50 सीएनजी पंप भी कार्यरत हैं। एफएसओ अमरजीत सिंह को झज्जर व सपना रानी को बहादुरगढ के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। उन्होंने कहा कि यदि किसी भी नागरिक को पेट्रोल, डीजल अथवा एलपीजी गैस की आपूर्ति में कोई समस्या आती है, तो वे जिला कंट्रोल रूम के दूरभाष नंबर 01251-254270 पर संपर्क कर सकते हैं। यह सेवा 24 घंटे उपलब्ध रहेगी।

मानसून सीजन से पहले हो सभी जल निकासी नालों और ड्रेनों की सफाई का कार्य: डीसी

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने अधिकारियों की बैठक में की आपदा प्रबंधन और बाढ़ राहत उपायों की समीक्षा

झज्जर, 30 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने सोमवार को लघु सचिवालय सभागार में आयोजित अधिकारियों की बैठक में बाढ़ राहत उपायों की तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने संबंधित विभागों को निर्देश देते हुए कहा कि सभी विभाग आपसी समन्वय बनाकर कार्य करें ताकि बेहतर परिणाम सुनिश्चित किए जा सकें।

डीसी ने कहा कि मानसून सीजन से पहले नगर निकाय, सिंचाई, जन स्वास्थ्य, लोक निर्माण, एचएसवीपी, एचएसआईआईडीसी व मार्केटिंग बोर्ड सहित सभी विभाग अपने-अपने क्षेत्राधिकार में आने वाले जल निकासी नालों एवं ड्रेनों की सफाई समय पर पूर्ण करें। साथ ही बाढ़ राहत से जुड़े प्रोजेक्ट्स को भी निर्धारित समय से पहले पूरा करने पर विशेष ध्यान दिया जाए।

बैठक में सिंचाई विभाग के अधीक्षण अभियंता सतीश जनावा ने जानकारी दी कि जिले में कुल 58 ड्रेन हैं, जिनमें 7 बड़ी ड्रेन हैं। सभी ड्रेनों की सफाई का कार्य मानसून से पूर्व पूरा कर लिया जाएगा।

डीसी ने निर्देश दिए कि पिछले अनुभवों के आधार पर संभावित स्थानों की पहचान करते हुए पहले से ही आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं। उन्होंने कहा कि जहां बिजली कनेक्शन की आवश्यकता है, वहां समय रहते कनेक्शन लिया जाए।

उन्होंने शहरी क्षेत्रों में जल निकासी व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ करने के निर्देश देते हुए कहा कि किसी भी रिहायशी क्षेत्र में जलभराव की स्थिति उत्पन्न नहीं होनी चाहिए। साथ ही फसलों को भी जलभराव से होने वाले नुकसान से बचाने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाएं।

उन्होंने संबंधित विभागों को आपदा प्रबंधन के लिए आवश्यक संसाधनों की सूची अपडेट रखने के भी निर्देश दिए।

बैठक में इन विभागों के अधिकारी रहे मौजूद

इस अवसर पर एसडीएम झज्जर रवि मीणा, एसडीएम बेरी रेणुका नांदल, डीआरओ मनबीर सांगवान, सिंचाई विभाग के अधीक्षण अभियंता सतीश कुमार, जनस्वास्थ्य विभाग के अधीक्षण अभियंता अमित श्योकंद, एक्सईएन खिवलेश भारद्वाज, नगर परिषद बहादुरगढ़ से ईओ संजय रोहिल्ला, बेरी नपा सचिव पूजा साहू, बिजली विभाग से सुनील कुमार सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

सरकार द्वारा निर्धारित पैमानों पर हो सरसों व गेहूं की खरीद : डीसी

- किसानों को गेहूं व सरसों की बिक्री में नहीं आनी चाहिए कोई परेशानी
- डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने रबी सीजन फसलों की खरीद को लेकर अधिकारियों को दिए जरूरी निर्देश

झज्जर, 30 मार्च। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल की अध्यक्षता में सोमवार को गेहूं की खरीद को लेकर संबंधित विभागों व खरीद एजेंसियों की बैठक आयोजित हुई। बैठक में जिले की मंडियों में सरसों व गेहूं खरीद की तैयारियों की समीक्षा की गई। डीसी ने फसल खरीद को सुचारू रूप से करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

डीसी ने कहा कि सरकार के निर्देशानुसार 28 मार्च से 6200 रूपए एमएसपी पर सरसों की सरकारी खरीद चालू है। इसी प्रकार बुधवार एक अप्रैल से 2585 रूपए एमएसपी पर गेहूं की खरीद शुरू होगी। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी मंडियों के खरीद केंद्रों सफाई व्यवस्था दुरूस्त रखी जाए। किसानों के लिए पेयजल का प्रबंध हो। उन्होंने कहा कि खरीद प्रक्रिया सरकार द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार हो। किसानों को जागरूक करें कि वे अपनी फसल को अच्छी तरह सुखाकर ही मंडी में लेकर आएं। उन्होंने कहा कि सरसों में आठ प्रतिशत से ज्यादा और गेहूं में 12 प्रतिशत से ज्यादा नमी नहीं होनी चाहिए। वहीं खरीदी गई उपज का नियमित उठान सुनिश्चित किया जाए। इस कार्य में किसी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

गेहूं खरीद के 10 और सरसों खरीद के लिए 5 केंद्र निर्धारित

जिले में गेहूं की खरीद के लिए झज्जर, बेरी, छारा, मातनहेल, माजरा दूबलधन, बहादुरगढ़, पाटोदा, आसौदा, बादली तथा ढाकला सहित कुल 10 मंडियां निर्धारित की गई हैं, जबकि सरसों की खरीद के लिए झज्जर, बेरी, मातनहेल, ढाकला एवं बहादुरगढ़ मंडियों में व्यवस्था की गई है।

इस अवसर पर एसडीएम झज्जर रवि मीणा, डीएफओ साहिती रेड्डी, एसडीएम रेणुका नांदल, डीएफएससी राजेश्वर मुदगिल, डीडीपीओ निशा तंवर, डीएफएसओ आदित्य कौशिक, डीडीए डॉ जितेंद्र अहलावत, एक्सईएन सुमित कुमार, एएफएसओ अमरजीत सिंह, संबंधित विभागों व खरीद एजेंसियों के अधिकारी मौजूद रहे।

राष्ट्रीय सहकारिता नीति 2025 के क्रियान्वयन को गति देने के लिए नई दिल्ली में राष्ट्रीय कॉन्क्लेव आयोजित

संगिनी घोष

राष्ट्रीय सहकारिता नीति 2025 के प्रभावी क्रियान्वयन को गति देने के उद्देश्य से विज्ञान भवन में एक राष्ट्रीय कॉन्क्लेव का आयोजन किया गया, जिसमें केंद्र, राज्य और विशेषज्ञों ने भाग लेकर सहकारिता क्षेत्र को मजबूत बनाने पर विचार-विमर्श किया।

इस कॉन्क्लेव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के "सहकार से समृद्धि" विजन को जमीनी स्तर पर लागू करने के उपायों पर चर्चा की गई। इसमें केंद्र और राज्यों के बीच समन्वय को और मजबूत बनाने पर विशेष जोर दिया गया।

अधिकारियों ने बताया कि राष्ट्रीय सहकारिता नीति 2025 सहकारिता क्षेत्र को देश के विकास के दूसरे इंजन के रूप में स्थापित करने के लिए एक व्यापक और दूरदर्शी रोडमैप प्रस्तुत करती है।

केंद्रीय सहकारिता राज्य मंत्री कृष्ण पाल गुर्जर ने सहकारिता को जन-आंदोलन बनाने का आह्वान किया, ताकि अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित हो सके।

कॉन्क्लेव में PACS के कंप्यूटरीकरण, विकेंद्रीकृत भंडारण और सहकारी इकोसिस्टम को सशक्त बनाने पर जोर दिया गया। विशेषज्ञों ने सहकारिता क्षेत्र के आर्थिक योगदान को तीन गुना बढ़ाने की रणनीतियों पर भी मंथन किया और अंतिम छोर तक किफायती ऋण उपलब्ध कराने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया।

ऐसे देखें तो यह कॉन्क्लेव सहकारिता क्षेत्र को सशक्त बनाकर समावेशी विकास और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

मुख्य बिंदु

* विज्ञान भवन में राष्ट्रीय कॉन्क्लेव का आयोजन
* पीएम नरेंद्र मोदी के "सहकार से समृद्धि" विजन पर जोर
* सहकारिता को विकास का दूसरा इंजन बनाने की दिशा
* कृष्ण पाल गुर्जर ने जन-आंदोलन का आह्वान किया
* PACS कंप्यूटरीकरण और विकेंद्रीकृत भंडारण पर जोर
* सहकारिता के आर्थिक योगदान को तीन गुना करने की रणनीति
* अंतिम छोर तक किफायती ऋण उपलब्ध कराने में सहकारिता की भूमिका

SEO Meta Description:

नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय कॉन्क्लेव में राष्ट्रीय सहकारिता नीति 2025 के क्रियान्वयन पर चर्चा हुई, जिसका उद्देश्य सहकारिता क्षेत्र को विकास का प्रमुख इंजन बनाना है।

नहरों में नहाने व कूदने पर प्रतिबंध के आदेश जारी : जिलाधीश

परिवहन विशेष न्यूज

–जन सुरक्षा के मद्देनजर भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा–163 के तहत सख्त निर्देश लागू

झज्जर, 30 मार्च। जिला प्रशासन द्वारा आमजन की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए महत्वपूर्ण आदेश जारी किए गए हैं। जिलाधीश स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने बताया कि जिला से होकर गुजरने वाली विभिन्न नहरों में गर्मी के मौसम के दौरान युवाओं व अन्य व्यक्तियों द्वारा नहाने एवं कूदने की घटनाएं सामने आती रही हैं, जिनमें तेज बहाव एवं अधिक गहराई के कारण डूबने से मृत्यु का गंभीर खतरा बना रहता है।

उन्होंने कहा कि बीते समय में ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जिनमें नहरों में डूबने से लोगों की मृत्यु हुई है। कई मामलों में शव बरामद न होने के कारण प्रशासनिक स्तर पर भी जटिल परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं, जिससे कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने में कठिनाई आती है।

इन्हीं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए जिलाधीश ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा-163 के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए जिला झज्जर की सभी नहरों में किसी भी व्यक्ति द्वारा कूदने, छलांग लगाने एवं नहाने पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाने के आदेश जारी किए हैं।

जिलाधीश की ओर से जारी आदेशों की पालना सुनिश्चित करवाने की जिम्मेदारी जिला नगर आयुक्त, जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी, संबंधित तहसीलदार, उप तहसीलदार, खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी, ग्राम पंचायतों एवं स्थानीय निकायों को सौंपी गई है। साथ ही सभी थाना प्रबंधकों को भी संबंधित नगर परिषद, नगरपालिका एवं ग्राम पंचायतों के साथ समन्वय बनाए रखते हुए इन आदेशों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं।

जिलाधीश ने स्पष्ट किया कि उक्त आदेशों की अवहेलना करने वाले किसी भी व्यक्ति के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता, 2023 की धारा 223 के तहत कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

जिला प्रशासन ने आमजन से अपील की है कि वे अपनी सुरक्षा को प्राथमिकता दें तथा इन आदेशों का पूर्ण पालन करें, ताकि किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना से बचा जा सके और जिले में शांति एवं कानून व्यवस्था बनाए रखी जा सके।

भगवान श्रीकृष्ण का अभिन्न अंग है सम्पूर्ण ब्रज मण्डल : आचार्य अम्बरीष कृष्ण महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। राम नगर कॉलोनी/परिक्रमा मार्ग स्थित श्रीकृष्ण सेवा धाम में श्रीराधा किशोरी निकुंज सेवा प्रकल्प ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय आयोजन विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मध्य आचार्य अम्बरीष कृष्ण महाराज के पावन सानिध्य में वृहद सन्त-विद्वत सम्मेलन अत्यंत श्रद्धा व धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को ब्रज भूमि की महिमा बताते हुए आचार्य अम्बरीष कृष्ण महाराज ने कहा कि ब्रजभूमि का प्राकट्य गोलोक धाम में श्रीराधा रानी की इच्छा से स्वयं भगवान श्रीकृष्ण के हृदय से हुआ था। इसलिए ये कोई साधारण भूमि नही है, अपितु भगवान श्रीकृष्ण का ही अभिन्न अंग है।

सन्त प्रवर रामदास महाराज एवं पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शास्त्री ने कहा कि ब्रज मंडल चौरासी कोस की परिक्रमा सर्वप्रथम भगवान श्रीकृष्ण ने अपने माता यशोदा और पिता नंदबाबा को कराई थी।जिससे उन्हें समस्त धार्मिक एवं तीर्थ स्थलों के दर्शनों के फल की प्राप्ति हुई थी।

प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं ब्रजभूमि कल्याण परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष पण्डित बिहारीलाल वशिष्ठ ने कहा कि ब्रज भूमि में समस्त तीर्थ स्थल सूक्ष्म रूप में विद्यमान हैं।यहां के कण-कण में भगवान श्रीकृष्ण का वास हैं।इसीलिए इसकी परिक्रमा करने से सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं।

श्रीरंगलक्ष्मी संस्कृत महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. राम सुदर्शन मिश्र एवं आचार्य सुमंत कृष्ण शास्त्री ने कहा कि ब्रज चौरासी कोस भगवान श्रीकृष्ण और उनकी आल्हादिनी शक्ति स्वरूपा श्रीराधा रानी की पावन लीला भूमि है।इसकी परिक्रमा करने से समस्त पापों का नाश होता है।

कार्यक्रम के अंतर्गत प्रख्यात भजन गायक पण्डित बनवारी महाराज एवं पण्डित श्याम सुन्दर ब्रजवासी ने ब्रज चौरासी कोस की महिमा से ओत-प्रोत भजनों का संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य गायन किया।

महोत्सव में श्रीनिवासाचार्य महाराज, आचार्य हरिप्रसाद द्विवेदी, डॉ. रामदत्त मिश्र, सन्त मदन बिहारी दास महाराज, आचार्य अनमोल कृष्ण शास्त्री, डॉ. जगदीश प्रसाद शर्मा, स्वामी अनंताचार्य महाराज, डॉ. राधाकांत शर्मा, प्रमोद जालान, आचार्य राजेश शास्त्री, डॉ. मृदुला तिवारी, आरती आहूजा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।संचालन डॉ. राम सुदर्शन मिश्र ने किया।

महोत्सव में पधारे सभी संतों-विद्वानों एवं धर्माचार्यों का स्वागत-सम्मान आचार्य अंकित मिश्रा के द्वारा स्मृति चिन्ह व ठाकुरजी का पटुका-प्रसादी-माला आदि भेंट करके किया गया।

इससे पूर्व समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं द्वारा श्रीहरिनाम संकीर्तन करते हुए श्रीधाम वृन्दावन की पंचकोसी परिक्रमा की गई।इसके अलावा बरसाना, गोवर्धन एवं रमणरेती आदि प्रमुख स्थलों के दर्शन किए गए।

श्रीव्यास तपोवन में नवनिर्मित संकट मोचन हनुमान मन्दिर का चतुर्दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से प्रारम्भ

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

बाटी(मथुरा)। बहुलावन (बाटी) स्थित श्रीव्यास तपोवन (श्रीराम गौ सेवा कुंज) में श्रीराम मित्र मंडल (रजि.) के द्वारा नवनिर्मित संकट मोचन हनुमान मन्दिर में चतुर्दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ प्रारम्भ हो गया है। महोत्सव का शुभारंभ ठाकुरश्री कौशल किशोर राम मंदिर के महंत आचार्य रामदेव चतुर्वेदी महाराज की अध्यक्षता में आचार्य डॉ. कुँज किशोर महाराज (गोपाल मन्दिर, मथुरा) के द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य वेदी पूजन अधिवास व अखंड रामायण पाठ के साथ हुआ।

इस अवसर पर महंत आचार्य रामदेव चतुर्वेदी महाराज ने श्रीहनुमानजी महाराज की महिमा बताते हुए कहा कि श्री हनुमान जी महाराज ज्ञान, भक्ति, बुद्धि, विवेक एवं बल की खान हैं। जहां-जहां धर्म का कार्य व प्रभु कथाएं होती हैं, वहां हनुमानजी सदैव निवास करते हैं।

प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी (वृन्दावन) ने कहा कि श्रीहनुमानजी महाराज का सुमिरन ही सभी बाधाओं को दूर करने वाला है।श्रीहनुमानजी महाराज अपने भक्तों से शीघ्र ही प्रसन्न होकर भक्तों को मनवांछित फल प्रदान करते हैं।

मानस चंचरीक आचार्य कुशदेव चतुर्वेदी एवं आचार्य लवदेव चतुर्वेदी ने कहा कि श्रीहनुमानजी महाराज भक्ति शिरोमणि हैं।कलिकाल में श्रीहनुमानजी की आराधना के बिना भगवान श्रीरामजी की भक्ति प्राप्त कर पाना असम्भव है

कार्यक्रम में महोत्सव की संयोजक श्रीमती कुंजलता चतुर्वेदी, महंत संतोष पुजारी, महंत रमणरेती दास, महंत प्रियाशरण महाराज, बाटी ग्राम के प्रधान संजय धनगर, डॉ. राधाकांत शर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

भगवान श्रीराम पुत्र कुश के नाम पर पहली बार महोत्सव, भस्मा बना आस्था का केंद्र

नई दिल्ली, ३० मार्च। भगवान श्रीराम के पुत्र कुश के नाम पर पहली बार आयोजित तीन दिवसीय कुशवासी महोत्सव—२०२६ का शुभारंभ रविवार को भस्मा मेला मैदान में भव्य रूप से हुआ। वैदिक मंत्रोच्चार और धार्मिक अनुष्ठानों के बीच शुरू हुए इस आयोजन ने पहले ही दिन आस्था और सांस्कृतिक विरासत का सजीव संगम प्रस्तुत किया। यह महोत्सव धराधाम इंटरनेशनल, क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश) तथा राजकीय बौद्ध संग्रहालय गोरखपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है।

धार्मिक स्थलों से इतिहास तक की यात्रा : महोत्सव के प्रथम दिवस प्रतिभागियों को शहर के प्रमुख धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण कराया गया। कार्यक्रम की शुरुआत धराधाम परिसर स्थित बाबा गंगेश्वर नाथ मंदिर में विधि-विधान से पूजन एवं नारियल अर्पण के साथ हुई। इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय बाल व्यास श्वेतिमा माधव प्रिया के वैदिक मंत्रोच्चार ने वातावरण को आध्यात्मिक बना दिया।

इसके पश्चात प्रतिभागियों ने कोलहट भगवती, चंदा घाट एवं मुक्तेश्वर नाथ मंदिर में दर्शन-पूजन किया। साथ ही राजकीय बौद्ध संग्रहालय के भ्रमण के दौरान प्राचीन धरोहरों एवं ऐतिहासिक विरासत का अवलोकन किया। उपनिदेशक डॉ. यशवंत सिंह राठौर ने संग्रहालय में संरक्षित पुरातात्विक संपदा की विस्तृत जानकारी दी। भ्रमण का समापन गोरखनाथ मंदिर में दर्शन के साथ हुआ।

खेल, प्रदर्शनी और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला : महोत्सव के आगामी चरण में सोमवार को स्कूली छात्र-छात्राओं की खेलकूद प्रतियोगिताएं एवं विभिन्न प्रदर्शनी आयोजित की जाएंगी। वहीं 31 मार्च को मुख्य मंच पर भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा, जिसमें स्थानीय प्रतिभाओं के साथ विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां आकर्षण का केंद्र रहेंगी।

गणमान्य जनों की रही उपस्थिति : नगर भ्रमण एवं उद्घाटन कार्यक्रम में संयोजक एवं धराधाम प्रमुख डॉ. सौरभ पाण्डेय सहित डॉ. यशवंत सिंह राठौर, गौतम पाण्डेय, रुचिरांगद पति त्रिपाठी, डॉ. सुनील दुबे, लक्ष्मीचंद शुक्ल, श्रीचंद शुक्ल, डॉ. सतीश चंद्र शुक्ल, डॉ. विनय श्रीवास्तव, सोमनाथ पाण्डेय, राजन सिंह सूर्यवंशी, कृपाशंकर राय, विजय नारायण शुक्ल, श्वेतिमा माधव प्रिया, एकता गोरखपुरी, प्रशांत पाण्डेय, गुरु पाण्डेय, प्रिया शुक्ला, नंदू यादव, सोहेल शम्सी एवं शुभम सिंह सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।महोत्सव का यह आयोजन क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को नई दिशा देने के साथ ही युवा पीढ़ी को अपनी परंपराओं से जोड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम बन रहा है।

अखिल भारतीय सेवा संघ की डिनर मीटिंग में 2026-27 पीएसटी टीम का गठन,हेमंत आहूजा बने अध्यक्ष

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) 29 मार्च 2026 को अखिल भारतीय सेवा संघ के सभी सदस्यों की एक महत्वपूर्ण डिनर मीटिंग बफेट बास्केट रेस्टोरेंट में आयोजित हुई। इस बैठक में चुनावी प्रक्रिया संपन्न कर सर्वसम्मति से वर्ष 2026-27 की नई पीएसटी टीम का चयन किया गया।

नई टीम में संरक्षक के रूप में विनोद गोयल, अध्यक्ष डॉ हेमंत आहुजा, सचिव गुलशन कथूरिया और कोषाध्यक्ष संजीव राजपाल को जिम्मेदारी सौंपी गई।

बैठक में राष्ट्रीय एवं प्रांतीय स्तर के कई प्रमुख पदाधिकारी भी उपस्थित रहे, जिनमें राष्ट्रीय संरक्षक डॉ योगेश बिदानी, अध्यक्ष डॉ इंदर गोयल, महासचिव विनोद धवन, प्रमोद सचदेवा, प्रांतीय संरक्षक राजेंद्र सपड़ा, अध्यक्ष महेंद्र सेहतिया, महासचिव आकाश सैन, कोषाध्यक्ष संदीप भाटिया सहित अन्य सदस्य शामिल रहे।

हिसार टीम से गौरव भाटिया, विनोद सोनी, रंजीव राजपाल, जतिन वधवा, विनोद वर्मा, अजय ग्रोवर, राजेंद्र मेहता, नरेंद्र ढुल, डिम्पल कथूरिया, सुरेंद्र सिंह सैनी, सुरेश बत्रा, मोहिंदर सांखला, प्रदीप कटारिया, राधेश्याम मेहता, अशोक सरदाना और अरविंद दुआ की उपस्थिति रही। साथ ही हितेश कथूरिया और योनिक कथूरिया भी समाज सेवा कार्यों को समझने के उद्देश्य से बैठक में शामिल हुए।

हिसार महिला टीम की ओर से प्रांतीय महिला प्रमुख सरूचि असीजा, अध्यक्ष सुनैना नागपाल और कोषाध्यक्ष स्वाति ढींगरा भी उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम के दौरान हिसार शाखा ने राष्ट्रीय और प्रांतीय टीम के सदस्यों का पटका पहनाकर सम्मान किया। इसके साथ ही राष्ट्रीय और प्रांतीय टीम ने नवगठित 2026-27 पीएसटी टीम को शुभकामनाएं और आशीर्वाद प्रदान किया।

बैठक का समापन संगठन की आगामी सामाजिक गतिविधियों और जनसेवा कार्यों को और प्रभावी बनाने के संकल्प के साथ हुआ।

आज का लोकतंत्र.......?

जब सरकारों का मकसद
जनता की आकांक्षा को पूरा
करना न होकर, धन्नासेठों के
मकसद को पूरा करना हो
जाए, अपनी सत्ता को बचाना
रह जाए या सत्ता को
हथियाना रह जाए,तव
लोकतंत्र एवं उसकी शाखाओं
का पतन होने लगता है।
जनता में लोकतंत्र अपनी
प्रासंगिकता खो देता है।
अराजक माहौल तानाशाही
का रास्ता साफ कर देता है।

– **भूपेंद्र सारस्वत 'सारथी'**
बरेली (उ0प्र0).

अफ़वाह नहीं, हकीकत देखिए: अन्नदाता आज भी इंतज़ार में है : डॉ विक्रम चौरसिया

परिवहन विशेष न्यूज

आज के समय में अफ़वाहें बहुत तेज़ी से फैल जा रही है,

कभी सिलेंडर की कमी की बात होती है, कभी पेट्रोल की किल्लत की खबर आती है ,और हम बिना पूरी सच्चाई जाने ही लंबी कतारों में खड़े हो जाते हैं।इसी परिप्रेक्ष्य में एक विचार मन में आता है

अगर बाजार को यह एहसास हो कि गेहूं, चावल और चने जैसी आवश्यक फसलों की कमी हो रही है, तो शायद उनकी कीमतों में तेजी आए और किसानों को उनकी उपज का बेहतर मूल्य मिल सके। लेकिन यह सोच अपने साथ एक गंभीर सवाल भी लाती है

क्या किसानों को उनका हक दिलाने के लिए हमें ऐसी परिस्थितियों का इंतजार करना पड़ेगा? आजादी के 75 वर्षों से अधिक समय बीत चुका है, फिर भी देश का अन्नदाता आज अपनी उपज के उचित मूल्य के लिए संघर्ष कर रहा है।

प्राकृतिक आपदाएं कभी बाढ़, कभी सूखा अन्नदाता के मेहनत पर पानी फेर देती हैं। आगजनी और फसलों में लगने वाले रोग उसकी उम्मीदों को बार-बार तोड़ते हैं।सरकारें बदलती हैं, नीतियां बनती हैं, और किसानों की आय दोगुनी करने के वादे किए जाते हैं।

फिर भी जमीनी सच्चाई यही है कि देश के कई हिस्सों से किसानों की आत्महत्या की खबरें समय-समय पर सामने आती रहती हैं, जो इस व्यवस्था की गहरी खामियों को उजागर करती हैं।जो किसान पूरे देश का पेट भरता है, वही कई बार अपने परिवार के साथ बुनियादी जरूरतों के लिए संघर्ष करता है।उसके बच्चे बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं, और अभावों के बीच अपना भविष्य गढ़ने को मजबूर होते हैं।यह स्थिति उस देश के लिए एक गंभीर प्रश्नचिह्न है, जो स्वयं को कृषि प्रधान और विश्व गुरु बनने की दिशा में अग्रसर है।

असल सवाल यह नहीं है कि अफ़वाहें फैलानी चाहिए या नहीं।

सवाल यह है कि आखिर कब तक किसान को उसका हक पाने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा?समय की मांग है कि किसानों को उनकी उपज का न्यायसंगत मूल्य सुनिश्चित किया जाए, कृषि नीतियों को और प्रभावी बनाया जाए, और उन्हें केवल सहानुभूति नहीं, बल्कि ठोस समर्थन और सम्मान दिया जाए,जिस दिन देश का किसान आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त होगा, उसी दिन भारत सच्चे अर्थों में विश्व गुरु बनने की दिशा में अग्रसर होगा।

चिंतक/मेंटर/
एक्टिविस्ट/दिल्ली

नफे सिंह नैन के आवास पर पहुंचे भाजपा प्रदेश महामंत्री सुरेन्द्र पूनिया, कार्यकर्ताओं ने किया भव्य स्वागत

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) नरवाना विधानसभा क्षेत्र के गांव जाजनवाला में वरिष्ठ समाजसेवी नफे सिंह नैन के आवास पर भारतीय जनता पार्टी हरियाणा के प्रदेश महामंत्री सुरेन्द्र पूनिया का आगमन हुआ। इस अवसर पर जिला जींद, हिसार और हांसी से पहुंचे भाजपा कार्यकर्ताओं ने उनका भव्य स्वागत किया।

कार्यक्रम के दौरान प्रदेश महामंत्री सुरेन्द्र पूनिया ने उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं से आत्मीय मुलाकात की और संगठनात्मक विषयों पर चर्चा की। इस मौके पर वरिष्ठ समाजसेवी नफे सिंह नैन ने कहा कि प्रदेश महामंत्री ने अपने व्यस्त समय में से समय निकालकर कार्यकर्ताओं के बीच पहुंचकर उन्हें सम्मान दिया, जिसके लिए वे हृदय से आभारी हैं। उन्होंने बताया कि सुरेन्द्र पूनिया के मिलनसार और सरल स्वभाव के कारण हर कार्यकर्ता उनसे प्रभावित है।

वहीं, सुरेन्द्र पूनिया ने स्वागत एवं सम्मान के लिए नफे सिंह नैन और सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता ही संगठन की असली ताकत होते हैं और उनसे मिलकर नई ऊर्जा प्राप्त होती है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि कार्यकर्ताओं के साथ निरंतर संवाद और संपर्क संगठन को मजबूत और गतिशील बनाता है।

इस दौरान क्षेत्र में भाजपा कार्यकर्ताओं में खासा उत्साह देखने को मिला और संगठन को मजबूत करने का संकल्प भी दोहराया गया।

इस अवसर पर वरिष्ठ भाजपा नेता श्रीनिवास गोयल,प्रदेश सचिव युवा मोर्चा भाजपा हरियाणा विपिन लोहिया,जिला आईटी सह प्रमुख भाजपा कमल हंदूजा,प्रवीण सैनी चेयरमैन मार्केट कमेटी बरवाला,रामफल नैन,राममिलन शर्मा,वासुदेव शर्मा,आनंद जैन, राकेश नैन,राजेश पूनिया,नीरज बंसल,रघुवीर नैन,सुरेश नैन,जसकरण तूर,कुणाल शामा,मनवीर पूनिया,मंडल मीडिया प्रभारी राजेश सलूजा बरवाला,सेवानिवृत जवान भारतीय सेना एवं कारगिल फाइटर राकेश नैन मात्रश्याम,नीरज बंसल,मास्टर कुलबीर सहारण,मनजीत पुनिया उपस्थित रहे।

द्वार खोलना: शिक्षा में शारीरिक और सामाजिक समावेशन

● विजय गर्ग

लाखों बच्चों के लिए, विशेष रूप से ग्रामीण और अविकसित क्षेत्रों में, स्कूल तक की यात्रा एक चुनौती है। लंबी दूरी, सुरक्षित परिवहन का अभाव, खराब सड़कें और असुरक्षित वातावरण अक्सर नियमित उपस्थिति को हतोत्साहित करते हैं। छोटे बच्चे, विशेषकर लड़कियां, सबसे अधिक प्रभावित हैं।

शिक्षा का उद्देश्य केवल बच्चों को स्कूलों में नामांकित करना नहीं है; इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक बच्चा स्कूल तक पहुंच सके और उसमें स्वागत महसूस कर सके। शिक्षा तक शारीरिक और सामाजिक पहुंच दो आवश्यक स्तंभ हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि क्या स्कूली शिक्षा एक सार्थक अनुभव बन जाती है या फिर एक अपूर्ण वादा बनी रहती है।

भौतिक पहुंच: सीखने का पहला कदम

लाखों बच्चों के लिए, विशेष रूप से ग्रामीण और अविकसित क्षेत्रों में, स्कूल तक की यात्रा एक चुनौती है। लंबी दूरी, सुरक्षित परिवहन का अभाव, खराब सड़कें और असुरक्षित वातावरण अक्सर नियमित उपस्थिति को हतोत्साहित करते हैं। छोटे बच्चे, विशेषकर लड़कियां, सबसे अधिक प्रभावित हैं। कई मामलों में, सुरक्षा संबंधी चिंताओं के कारण परिवार अपने बच्चों को दूर स्थित स्कूलों में भेजने में संकोच करते हैं।

भौतिक पहुंच सुनिश्चित करने का अर्थ है सुलभ दूरी के भीतर स्कूल बनाना, विश्वसनीय परिवहन सुविधाएं उपलब्ध कराना और सुरक्षित मार्ग तैयार करना। उचित कक्षाएं, स्वच्छ पेयजल और स्वच्छता सुविधाएं —विशेषकर लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालय 】 यह भी बच्चों को स्कूल में रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इनके बिना, नामांकित छात्र भी पढ़ाई छोड़ सकते हैं।

सामाजिक पहुंच: स्कूल गेट से परे

स्कूल जाना केवल आधी लड़ाई है; इसके अंदर स्वीकार्यता और मूल्य का एहसास होना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। गरीबी, जातिगत भेदभाव, लैंगिक पूर्वाग्रह, विकलांगता और भाषा संबंधी अंतर जैसी सामाजिक बाधाएं अक्सर बच्चों को शिक्षा में पूरी तरह से भाग लेने से रोकती हैं।

हाशिए पर पड़े समुदायों के बच्चों को बहिष्कार, बदमाशी या उपेक्षा का सामना करना पड़ सकता है, जिससे उनका आत्मविश्वास और सीखने में रुचि कम हो जाती है। इसी प्रकार, यदि समावेशी शिक्षण पद्धतियां और सुविधाएं अनुपस्थित हों तो विकलांग बच्चों को कक्षाएं असुविधाजनक लग सकती हैं।

सामाजिक पहुंच के लिए एक समावेशी और सहायक वातावरण का निर्माण आवश्यक है, जहां प्रत्येक बच्चे को सम्मान महसूस हो। शिक्षक समानता, सहानुभूति और भागीदारी को बढ़ावा देकर इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पाठ्यक्रम और कक्षा अभ्यास में विविधता को प्रतिबिंबित करना चाहिए तथा छात्रों के बीच आपसी सम्मान को प्रोत्साहित करना चाहिए।

परिवारों और समुदायों की भूमिका

शिक्षा तक शारीरिक और सामाजिक पहुंच सुनिश्चित करने में माता-पिता और समुदाय प्रमुख भागीदार हैं। जागरूकता अभियान परिवारों को शिक्षा के दीर्घकालिक मूल्य को समझने में मदद कर सकते हैं, विशेष रूप से लड़कियों के लिए। सामुदायिक भागीदारी से स्कूल की सुरक्षा में सुधार हो सकता है, अनुपस्थिति कम हो सकती है, तथा ऐसी संस्कृति बन सकती है जो सीखने को महत्व देती है।

स्थानीय शासन और स्कूल प्रबंधन समितियां बाधाओं की पहचान कर सकती हैं तथा व्यावहारिक समाधानों पर काम कर सकती हैं, जैसे परिवहन का व्यवस्था करना या भेदभाव से निपटना।

सरकारी और नीतिगत हस्तक्षेप

सरकारों को मजबूत नीतियों और प्रभावी क्रियान्वयन के माध्यम से शिक्षा तक समान पहुंच को प्राथमिकता देनी चाहिए। निःशुल्क शिक्षा, मध्याविध भोजन योजनाएं, छात्रवृत्ति और बुनियादी ढांचे के विकास जैसी पहल स्कूल तक पहुंच में महत्वपूर्ण सुधार कर सकती हैं। हालाँकि, नीतियों को संख्याओं से आगे बढ़ना होगा और गुणवत्ता तथा समावेशीता पर ध्यान केंद्रित करना होगा।

कमजोर समूहों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई भी बच्चा पीछे न छूट जाए। निगरानी प्रणालियों को न केवल नामांकन पर नज़र रखनी चाहिए, बल्कि उपस्थिति, भागीदारी और सीखने के परिणामों पर भी नजर रखनी चाहिए।

निष्कर्ष

शिक्षा एक मौलिक अधिकार है, लेकिन यह तभी सार्थक होता है जब प्रत्येक बच्चा शारीरिक रूप से स्कूल पहुंच सके और सामाजिक रूप से वहां शामिल हो सके। सच्ची प्रगति एक ऐसी शिक्षा प्रणाली के निर्माण में निहित है जो सुलभ, समावेशी और सशक्तिकरणकारी हो। जब बच्चों को स्कूल में शारीरिक और सामाजिक दोनों तरह से प्रवेश दिया जाता है, तो वे न केवल शिक्षित होते हैं - बल्कि वे सपने देखने, आगे बढ़ने और बेहतर समाज में योगदान करने में भी सक्षम होते हैं।

नागरिक परिक्रमा : (संजय पराते की राजनैतिक टिप्पणियां)

1. केरल में संतुलन खोते राहुल गांधी

माकपा और कांग्रेस दोनों इंडिया ब्लॉक की पार्टियां हैं, लेकिन केरल में सत्ता के लिए टक्कर भी इन्हीं दोनों के बीच है। केरल का इतिहास रहा है : एक बार माकपा और अगली बार कांग्रेस। लेकिन पिछले विधानसभा चुनाव में माकपा ने इस मिथक को तोड़ दिया। केरल के इतिहास में यह पहली बार हुआ है कि कोई पार्टी पुनः लगातार चुनकर सत्ता में पहुंची हो और यह इतिहास माकपा ने बनाया है। इस बार होने जा रहे विधानसभा चुनाव में माकपा लगातार तीसरी बार सत्ता में आने की लड़ाई लड़ रही है, तो कांग्रेस पिछले दस साल के सूखे को खत्म करना चाहती है। कांग्रेस को यह लग रहा है कि यदि इस बार भी वह सत्ता से दूर रही और माकपा तीसरी बार विजयी हो गई, तो बंगाल का इतिहास न बन जाएं, जहां माकपा ने लगातार 35 सालों तक शासन किया था।

इसलिए चुनावी लड़ाई काफी तल्ख है। लेकिन फिर भी यदि कांग्रेस पूरे देश में भाजपा के विकल्प के रूप में उभरना चाहती है, तो यह तल्खी इतनी नहीं होनी चाहिए कि इंडिया ब्लॉक को ही कमजोर कर दे। आखिर, विपक्ष की सबसे बड़ी पार्टी होने के नाते इंडिया ब्लॉक को मजबूत करने और उसे स्थायित्व देने की सबसे ज्यादा जिम्मेदारी कांग्रेस पर ही आती है। लेकिन ऐसा नहीं लगता कि अपनी इस जिम्मेदारी के प्रति कांग्रेस सचेत है।

केरल के अंदर कांग्रेस के स्थानीय नेताओं की माकपा के प्रति तल्खी समझ में आती है, लेकिन प्रतिपक्ष के नेता के रूप में राहुल गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में मल्लिकार्जुन खड़गे के बयान यह बताते है कि इतिहास से वे कुछ भी सीखने के लिए तैयार नहीं हैं। हाल ही में कांग्रेस के इन दोनों सर्वोच्च नेताओं ने बयान दिया है कि ईडी और अन्य केंद्रीय एजेंसियों को केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन को गिरफ्तार करना चाहिए। ऐसे बचकाने भरे बयान की उम्मीद किसी को नहीं थी, क्योंकि केरल के मुख्यमंत्री की ईमानदारी और माकपा की धर्मनिरपेक्ष साख पर प्रश्नचिन्ह नहीं लगाया जा सकता। यह विधानसभा चुनाव में सत्ता हासिल करने के लिए सस्ती बयानबाजी और झूठी अफवाहें फैलाने से ज्यादा और कुछ नहीं है। लेकिन ऐसी बयानबाजी से कांग्रेस को कम और उस भाजपा को ही ज्यादा फायदा होगा, जो केरल विधानसभा में इक्का-दुक्का सीटों के साथ प्रवेश करने की कई सालों से कोशिश कर रही है।

सभी जानते है कि माकपा ने विपक्षी नेताओं के खिलाफ केंद्रीय एजेंसियों के दुरुपयोग का लगातार विरोध किया है। पिछले एक दशक से ज्यादा के मोदी राज में इन संस्थाओं की स्वतंत्रता और स्वायत्तता को खत्म कर दिया गया है और आज इन केंद्रीय एजेंसियों को राजनैतिक हथियार बनाकर भाजपा अपना जनाधार बढ़ा रही है। इसका शिकार स्वयं कांग्रेस भी हुई है, जिसकी राज्य सरकारों की प्रतिष्ठा को इन एजेंसियों की छद्म कार्यवाहियों के जरिए धूमिल किया गया और चुनावों में उसे शिकस्त दी गई है।

कांग्रेस नेताओं को आत्ममंथन करना चाहिए कि आखिर क्यों, एक के बाद एक, अनेक राज्यों में, उनके नेताओं ने पार्टी छोड़ दी और वे भाजपा में शामिल हो गए। यह एक जगजाहिर तथ्य है कि असम के वर्तमान भाजपाई मुख्यमंत्री हिमंता सरमा पिछली कांग्रेस सरकार में महत्वपूर्ण मंत्रालय संभाले हुए थे। त्रिपुरा में, वाम मोर्चा को हराने के लिए 2018 में पूरा कांग्रेस नेतृत्व भाजपा में विलीन हो गया था। आज केंद्र सरकार के कई मंत्री और भाजपा से जुड़े संसद सदस्य कल तक कांग्रेस के प्रमुख नेता थे। छत्तीसगढ़ में उनके पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की अपने कार्यकाल के दौरान भाजपा से मिलीभगत किसी से छुपी हुई नहीं थी और ऐसा कहा जाता है कि वे संघ गिरोह के सरदार मोहन भागवत के दरबार में मत्था भी टेक चुके हैं। अपने राजनैतिक पुनर्वास की खोज में लगे, यही के एक दूसरे कांग्रेसी आदिवासी नेता अरविंद नेताम की भी मोहन भागवत से मुलाकात के बाद कायापलट हो चुकी है। हकीकत यह है कि भाजपा के लिए आज कांग्रेस एक 'फीडर संगठन' (भर्ती का ज़रिया) बन गई है।

यह भी उल्लेखनीय तथ्य है कि वर्तमान माकपा नीत वामपंथी सरकार के दस वर्षों के दौरान, केरल में एक भी सांप्रदायिक दंगा नहीं हुआ है, जबकि कांग्रेस सरकार का कार्यकाल दंगा मुक्त नहीं था और राज्य में सबसे भीषण सांप्रदायिक दंगा माराड में हुआ था। इस दंगे पर रोक लगाई जा सकती थी, यदि कांग्रेस संघी गिरोह की सांप्रदायिक हरकतों के प्रति सख्त होती। इन चुनावों में भी, कांग्रेस अल्पसंख्यक कट्टरपंथी ताकतों के साथ गठबंधन कर रही है। केरल के हाल ही में संपन्न हुए स्थानीय निकाय चुनावों में भी माकपा और वामपंथ को हराने के लिए कांग्रेस-मुस्लिम लीग-भाजपा के गठजोड़ का नजारा केरल की जनता ने देखा है। मट्टाथुर ग्राम पंचायत में तो एलडीएफ को सत्ता से दूर रखने के लिए सभी निर्वाचित कांग्रेसी वार्ड पार्षदों ने कांग्रेस से इस्तीफा देकर भाजपा में शामिल होना पसंद किया है। तिरुवनंतपुरम नगर निगम में तो भाजपा के उभार के पीछे साफ-साफ शशि थरूर जैसे कांग्रेसी नेताओं का ही हाथ है। कांग्रेस के इस रिकॉर्ड से सांप्रदायिक-तानाशाही ताकतों के खिलाफ लड़ने का कांग्रेस का दावा ही कमजोर होता है।

यह नहीं भूला जाना चाहिए कि कांग्रेस ने इसी तरह दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी की भी मांग की थी, जबकि आम आदमी पार्टी (आप) इंडिया ब्लॉक का हिस्सा थी। कांग्रेस के इस रुख के बाद केजरीवाल इंडिया ब्लॉक से अलग हो गए। इससे इंडिया ब्लॉक कमजोर हुआ और भाजपा को मजबूत होने का मौका मिला। मुख्यमंत्री रहते केजरीवाल को गिरफ्तार किया गया, यह अलग बात है कि कोर्ट से वे बरी हो गए। लेकिन आप और केजरीवाल के खिलाफ जो दुष्प्रचार अभियान कांग्रेस और भाजपा ने चलाया, उसका कोई फायदा कांग्रेस को तो नहीं मिला, लेकिन भाजपा ने जरूर सत्ता हासिल कर ली। यह कांग्रेस के अवसरवादी चरित्र को बेनकाब करता है। दिल्ली में भाजपा की जीत का बड़ा श्रेय कांग्रेस को ही जाता है।

लेकिन केरल दिल्ली नहीं है, क्योंकि केरल की आम जनता राजनैतिक रूप से काफी जागरूक है। केरल की जनता ने पिछले दस वर्षों के वामपंथी शासन के तहत अभूतपूर्व विकास और सांप्रदायिक सद्भाव को देखा है। वह भाजपा के चरित्र को भी समझती है और राहुल गांधी के बयानबाजी की गहराई को भी। केरल चुनाव के नतीजों में आम जनता की राजनैतिक जागरूकता की झलक साफ-साफ दिखाई देगी।

****

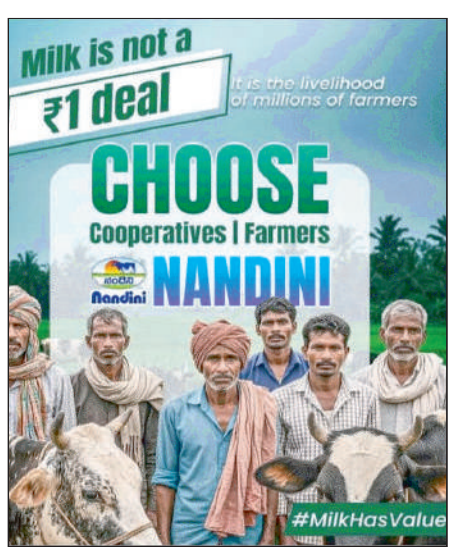

2. एक रूपये प्रति लीटर में दूध!

है न चौंकाने वाली बात! लेकिन है सही। जी हां, कर्नाटक में फ्लिपकार्ट अपने प्रचारात्मक बिक्री अभियान के तहत एक रूपये प्रति लीटर की दर पर दूध बेच रहा है। इस ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का स्वामित्व अमेरिकी खुदरा दिग्गज वॉलमार्ट के पास है। प्रचार अवधि के दौरान लाखों लीटर दूध मिट्टी के भाव में फ्लिपकार्ट ने बेचा है, जिससे बेंगलुरु मिल्क यूनियन लिमिटेड जैसे सहकारी संघों की बिक्री में लगभग 50,000 लीटर प्रतिदिन की कमी दर्ज की गई है। इसका सीधा असर पशुपालक और दूध उत्पादक किसानों की आजीविका पर पड़ा है। ऐसा ही चलता रहा, तो कुछ दिनों में ही कर्नाटक की सहकारी समितियों के ठप्प होने का खतरा पैदा हो गया है।

यह तो केवल झांकी है। जब अमेरिका और विभिन्न विकसित देशों के साथ केंद्र की भाजपा सरकार ने जो मुक्त व्यापार समझौते किए हैं, उन पर अमल के कृषि क्षेत्र में जो परिणाम सामने आएंगे, वे हमारे किसानों और खेती-किसानी के लिए कितने विनाशकारी होंगे, कर्नाटक के दूध बाजार पर कब्जे के लिए वॉलमार्ट द्वारा की जा रही इस आक्रामक नीति से समझा जा सकता है। फ्लिपकार्ट द्वारा एक रूपये की कीमत पर दूध की बिक्री कोई साधारण मार्केटिंग अभ्यास नहीं है, बल्कि वैश्विक पूंजी से समर्थित बड़ी प्लेटफ़ॉर्म कंपनियों द्वारा अपनाई जाने वाली शिकारी मूल्य निर्धारण की एक क्लासिक मिसाल है, जिसका शिकार भारत और तीसरी दुनिया के गरीब देशों को बनाया जा रहा है। ऐसी रणनीतियाँ बाजार पर कब्ज़ा करने, मौजूदा सहकारी संस्थाओं को कमजोर करने और घरेलू उत्पादन प्रणाली को नष्ट करने और अंततः खरीद व वितरण पर कॉरपोरेट नियंत्रण स्थापित करने के उद्देश्य से अपनाई जाती हैं। तीसरी दुनिया का शोषण करने की यह साम्राज्यवादी रणनीति है।

वालमार्ट-फ्लिपकार्ट की इस शिकारी रणनीति से पूरे कर्नाटक डेयरी किसानों में गुस्सा पैदा हुआ है, लेकिन अमित शाह के नेतृत्व वाला सहकारिता मंत्रालय अभी तक सोया हुआ है। उसने कर्नाटक के किसानों को बचाने के लिए अभी तक कोई कदम नहीं उठाया है और ऐसा लगता है कि उसने विदेशी कॉरपोरेट कंपनियों और बाजार के दबाव के आगे समर्पण कर दिया है।

दूध बाजार पर यह आक्रमण ऐसे समय में और भी चिंताजनक है, जब डेयरी किसान पहले से ही बढ़ती लागत, भुगतान में देरी और दूध उत्पादन के लिए उचित लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने में कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। कर्नाटक के दूध बाजार पर कब्जे के लिए फ्लिपकार्ट के इस शिकारी अभियान के बाद किसानों के दूध के औसत विक्रय मूल्य में भारी गिरावट तो आई ही है, दूध बिक्री में गिरावट के मद्देनजर सोसायटियों ने किसानों का दूध खरीदना भी कम कर दिया है। इस प्रकार, किसानों पर दोहरी मार पड़ रही है। दूध बाजार पर कॉरपोरेट कंपनियों द्वारा आक्रमण की यह रणनीति भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग द्वारा निर्धारित मानदंडों का भी उल्लंघन करती है और इसकी जांच की जानी चाहिए।

यह तो साफ है कि भविष्य में सहकारी संस्थाओं पर और ज्यादा हमले होंगे। उतना ही यह भी साफ है कि न तो अमित शाह के हाथ में देश का सहकारिता क्षेत्र सुरक्षित है और न ही संघी गिरोह के हाथ में देश का भविष्य सुरक्षित है।

(टिप्पणीकार अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।

पौधों के वायरस: अज्ञात नायक जो दवाएं देते हैं और ट्यूमर को नष्ट करते हैं

डॉ विजय गर्ग

चिकित्सा की विशाल दुनिया में, वायरस को अक्सर दुश्मन के रूप में देखा जाता है। फिर भी, एक उल्लेखनीय वैज्ञानिक बदलाव चल रहा है - कुछ पौधों के वायरस को कैंसर के खिलाफ लड़ाई में शक्तिशाली सहयोगियों में परिवर्तित करना। ये सूक्ष्म एजेंट, जो मनुष्यों के लिए हानिरहित हैं, दवा वितरण और ट्यूमर विनाश के लिए अभिनव उपकरण के रूप में उभर रहे हैं, तथा आधुनिक स्वास्थ्य देखभाल में चुपचाप क्रांति ला रहे हैं।

प्रकृति नैनोटेक्नोलॉजी

पौधों के वायरस अनिवार्य रूप से प्राकृतिक नैनोकण होते हैं। वे छोटे, अत्यधिक संरचित जैविक इकाई होते हैं जिन्हें प्रकृति द्वारा डिजाइन किया गया है। वैज्ञानिकों ने पाया है कि इन वायरस को नैनोकैरियर के रूप में पुनः उपयोग किया जा सकता है, जो चिकित्सीय अणुओं को सीधे मानव कोशिकाओं में ले जाने में सक्षम हैं।

सिंथेटिक नैनोकणों के विपरीत, पौधा वायरस-आधारित प्रणालियां हैं

बाइओडिग्रेड्डबल

जैव संगत

उत्पादन में आसान और सस्ता

इससे वे अगली पीढ़ी के चिकित्सा उपचार के लिए आदर्श उम्मीदवार बन जाते हैं।

सटीक दवा वितरण

कैंसर उपचार में सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है स्वस्थ ऊतकों को नुकसान पहुंचाए बिना ट्यूमर कोशिकाओं तक विशेष रूप से दवाएं पहुंचाना। पारंपरिक कीमोथेरेपी अक्सर पूरे शरीर को प्रभावित करती है, जिसके परिणामस्वरूप गंभीर दुष्प्रभाव होते हैं।

पौधा वायरस नैनोकण लक्षित वितरण वाहन के रूप में कार्य करके इस समस्या का समाधान करते हैं। वैज्ञानिक उन्हें कीमोथेरेपी एजेंट, आनुवंशिक सामग्री (जैसे siRNA) या प्रतिरक्षा मॉड्यूलेटर जैसी दवाओं से भर सकते हैं। ये इंजीनियर कण फिर शरीर में घूमते हैं और ट्यूमर स्थल पर ही अपना भार छोड़ देते हैं।

उदाहरण के लिए, तम्बाकू मोज़ेक वायरस जैसे संशोधित पौधों के वायरस का उपयोग कैंसर रोधी दवाओं को सीधे स्तन कैंसर कोशिकाओं में ले जाने के लिए किया गया है, जिससे विषाक्तता कम होने के साथ-साथ उपचार की दक्षता भी बेहतर होती है।

प्रतिरक्षा प्रणाली को जागृत करना

दवा वितरण के अलावा, पौधे वायरस कैंसर प्रतिरक्षा चिकित्सा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी अनूठी संरचना स्वाभाविक रूप से प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित करती है, जिससे शरीर ट्यूमर को पहचानने और उन पर हमला करने में मदद करता है।

जब ये वायरस जैसे कण शरीर में प्रवेश करते हैं तो वे चेतावनी संकेत के रूप में कार्य करते हैं। वे प्रतिरक्षा कोशिकाओं को सक्रिय करते हैं, तथा उन्हें कैंसर कोशिकाओं को खतरा मानने और नष्ट करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

कुछ वनस्पति वायरस, जैसे काउपी मोज़ेक वायरस, निम्नलिखित क्षमता प्रदर्शित करते हैं

ट्यूमर को छोटा करें

पुनरावृत्ति को रोकें

दीर्घकालिक प्रतिरक्षा स्मृति को सक्रिय करें

यह दोहरी क्रिया—प्रत्यक्ष लक्ष्यीकरण और प्रतिरक्षा सक्रियण—इन्हें कैंसर उपचार में विशेष रूप से शक्तिशाली बनाता है।

सुरक्षित और टिकाऊ समाधान

पौधों के वायरस का एक प्रमुख लाभ उनकी सुरक्षा है। चूंकि वे मनुष्यों को संक्रमित नहीं करते, इसलिए पशु या मानव वायरस की तुलना में उनका जोखिम न्यूनतम है।

इसके अतिरिक्त, इन्हें सूर्य के प्रकाश, पानी और मिट्टी जैसे सरल संसाधनों का उपयोग करके पौधों में उगाया जा सकता है। इससे उत्पादन टिकाऊ और मापनीय हो जाता है। इससे किफायती चिकित्सा पद्धतियों का द्वार खुल जाता है, विशेष रूप से विकासशील देशों में।

चुनौतियां और भविष्य की संभावनाएं

उनके वादे के बावजूद, पौधों के वायरस-आधारित उपचार अभी भी प्रयोगात्मक चरण में हैं। चुनौतियों में शामिल हैं:

नियामक अनुमोदन प्रक्रियाएं

कुछ रोगियों में संभावित प्रतिरक्षा प्रतिक्रियाएं

नैदानिक उपयोग के लिए विनिर्माण का विस्तार

हालाँकि, इन प्रौद्योगिकियों को परिष्कृत करने के लिए चल रहे शोध जारी हैं। वैज्ञानिक एक ऐसे भविष्य की कल्पना करते हैं जहां पौधों के वायरस का नियमित रूप से उपयोग किया जाएगा

लक्षित कैंसर चिकित्सा

वैक्सीन वितरण प्रणालियां

व्यक्तिगत चिकित्सा

निष्कर्ष

पौधों के वायरस, जिन्हें कभी साधारण कृषि रोगाणुओं के रूप में नजरअंदाज किया जाता था, अब आधुनिक चिकित्सा के गुमनाम नायक बनते जा रहे हैं। सटीक रूप से दवाएं उपलब्ध कराकर और शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को सक्रिय करके, वे कैंसर से लड़ने के लिए एक नया, अधिक स्मार्ट तरीका प्रदान करते हैं।

इस शांत क्रांति में, प्रकृति स्वयं हमें उपकरण प्रदान करती है। यह हमें याद दिलाती है कि कभी-कभी सबसे छोटे जीव भी सबसे बड़ा अंतर ला सकते हैं।

वफादारी का जश्न: 159 सीआरपीएफ बटालियन में श्वान 'प्रिंस' का धूमधाम से मना जन्मदिन

देश की सुरक्षा में तैनात हर वीर चाहे जवान हो या श्वान, सम्मान और स्नेह का सच्चा हकदार : मयंक

चिकपाल। 159 बटालियन सीआरपीएफ मुख्यालय में एक अनोखा और दिल को छू लेने वाला कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसने सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। इस कार्यक्रम की खासियत यह रही कि यहां किसी जवान या अधिकारी का नहीं, बल्कि बटालियन के प्रिय श्वान 'प्रिंस' का जन्मदिन बड़े ही उत्साह और धूमधाम से मनाया गया।

गोल्डेन रिट्रीवर नस्ल का 'प्रिंस' आज तीन वर्ष का हो गया। इस खास मौके पर कमांडेंट कुमार मयंक के नेतृत्व में जवानों ने केक काटकर उसका जन्मदिन मनाया। पूरे परिसर में खुशी का माहौल देखने को मिला। जवानों ने प्रिंस को केक खिलाया, उसके साथ खेला और उसे विशेष भोजन भी दिया गया।

प्रिंस केवल एक पालतू श्वान नहीं, बल्कि बटालियन का एक महत्वपूर्ण सदस्य है। वह सुरक्षा कार्यों में अपनी सक्रिय भूमिका निभाता है और अपनी सूझबूझ व वफादारी से जवानों का भरोसेमंद साथी बना हुआ है। ऐसे आयोजनों के माध्यम से जवानों और श्वानों के बीच भावनात्मक संबंध और भी मजबूत होते हैं।

कमांडेंट कुमार मयंक ने बताया कि प्रिंस की भूमिका बेहद अहम है और उसका योगदान सराहनीय है। उन्होंने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम न केवल श्वानों के प्रति सम्मान व्यक्त करते हैं, बल्कि जवानों के मनोबल को भी बढ़ाते हैं।

यह आयोजन इस बात का प्रतीक है कि देश की सुरक्षा में लगे हर सदस्य चाहे वह इंसान हो या श्वान समान रूप से सम्मान और स्नेह का पात्र है।

1 अप्रैल को निकलेगी भगवान चित्रगुप्त की शोभायात्रा

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। गोरखपुर जर्नलिस्ट्स प्रेस क्लब में कायस्थ विकास परिषद द्वारा आयोजित प्रेस वार्ता में परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष वैद्य राजीव सिन्हा ने कहा कि आगामी 1 अप्रैल 2026 (बुधवार) को शाम 6 बजे भगवान श्री चित्रगुप्त जी की भव्य शोभायात्रा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी निकाली जाएगी।

उन्होंने कहा कि भगवान चित्रगुप्त समस्त सृष्टि के न्याय के देवता हैं और उन्हें किसी एक जाति तक सीमित करना उचित नहीं है। "कायस्थ कोई जाति नहीं, बल्कि ब्रह्मकुल है। ईश्वर सभी के होते हैं," इस संदेश को समाज में प्रसारित करने का कार्य परिषद पिछले कई दशकों से कर रही है। उन्होंने कहा कि कलम को आत्मसात करने वाला हर व्यक्ति भगवान चित्रगुप्त का वंशज है।

राजीव सिन्हा ने आगे कहा कि चैत्र पूर्णिमा के दिन भगवान चित्रगुप्त का प्रकटोत्सव हुआ, इसी कारण नववर्ष का शुभारंभ भी इसी कालखंड में माना जाता है। उन्होंने भगवान चित्रगुप्त को न्याय के साथ-साथ धन के देवता भी बताया और "हर घर चित्रगुप्त, हर घर कलम-दवात" का संदेश दिया। उन्होंने यह भी कहा कि देश के प्रत्येक न्यायालय में भगवान चित्रगुप्त की मूर्ति स्थापित किए जाने के लिए परिषद संकल्पित है।

कार्यक्रम की जानकारी देते हुए बताया गया कि शोभायात्रा परिषद के केंद्रीय कार्यालय से प्रारंभ होकर तरंग चौक, आर्य नगर, हजारीपुर, जटाशंकर होते हुए पुनः केंद्रीय कार्यालय पर समाप्त होगी, जहां आरती एवं महाप्रसाद का आयोजन किया जाएगा।

नक्सल प्रभावित क्षेत्र सीआरपीएफ का सिविक एक्शन प्रोग्राम, जरूरतमंदों को सामग्री व स्वास्थ्य सेवाएं

कमांडेंट कुमार मयंक के नेतृत्व में ग्रामीणों को मिली सहायता व स्वास्थ्य सेवाएं

चिकपाल: नक्सल प्रभावित क्षेत्र सुकमा के ग्राम पुसवाड़ा में 159 बटालियन सीआरपीएफ द्वारा सिविक एक्शन प्रोग्राम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन पुलिस उप महानिरीक्षक (परिचालन रेंज) के मार्गदर्शन एवं 159 बटालियन के कमांडेंट कुमार मयंक के नेतृत्व में किया गया।

इस दौरान ग्रामीणों एवं जरूरतमंदों के बीच निःशुल्क कंबल, लुंगी, मच्छरदानी, बर्तन, साड़ी, पानी रखने के ड्रम सहित दैनिक उपयोग की वस्तुओं का वितरण किया गया। साथ ही खेलकूद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से क्रिकेट किट, फुटबॉल, वॉलीबॉल आदि खेल सामग्री भी दी गई। कार्यक्रम के साथ ही एक निःशुल्क मेडिकल कैंप का भी आयोजन किया गया, जिसमें बटालियन के चिकित्सा अधिकारियों द्वारा ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। इस दौरान बीपी जांच, मलेरिया जांच सहित आवश्यक दवाइयों का वितरण किया गया।

कमांडेंट कुमार मयंक ने बताया कि सिविक एक्शन प्रोग्राम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों में सुरक्षा का भाव उत्पन्न करना तथा केंद्र व राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी आम लोगों तक पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से ग्रामीणों और प्रशासन के बीच बेहतर समन्वय स्थापित होता है।

इस अवसर पर 159 बटालियन के सहायक कमांडेंट तुलसी दास, अन्य अधिकारी, जवान एवं स्थानीय गणमान्य नागरिक भी उपस्थित रहे। ग्रामीणों ने सीआरपीएफ के इस जनहितकारी कार्य की सराहना की।

दो दिवसीय कार्यशाला का हुआ समापन

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। चौरीचौरा विधानसभा क्षेत्र में भाजपा द्वारा आयोजित पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण वर्ग का समापन सोमवार को हो गया। यह दो दिवसीय प्रशिक्षण अभियान 29 और 30 मार्च को चौरीचौरा मंडल में आयोजित किया गया था। चौरीचौरा के विधायक सरवन निषाद ने अभियान का समापन किया। प्रशिक्षण वर्ग के पहले दिन, 29 मार्च को, भाजपा के जिला अध्यक्ष जनार्दन तिवारी ने ₹भाजपा इतिहास और विकास₹ विषय पर उद्बोधन दिया। इसके बाद, एससी/एसटी आयोग के उपाध्यक्ष (राज्य मंत्री दर्जा प्राप्त) बेचन राम ने ₹वैचारिक अधिष्ठान₹ पर मार्गदर्शन प्रदान किया। पहले दिन के अन्य सत्रों में, भाजपा महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष श्रीमती चंचल शुक्ला ने ₹हमारी कार्यपद्धति₹ पर, जिला महामंत्री सबल सिंह ने ₹कार्य विस्तार की हमारी दृष्टि₹ पर, और जिला उपाध्यक्ष संजय सिंह श्रीनेत ने ₹बूथ प्रबंधन₹ पर कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया। कार्यशाला के दूसरे दिन, सोमवार 30 मार्च को, छठे सत्र में भाजपा सोशल मीडिया विभाग के जिला संयोजक सूरज निगम ने सोशल मीडिया पर प्रशिक्षण दिया। समापन सत्र (सातवें सत्र) में चौरीचौरा के विधायक इंजीनियर सरवन कुमार निषाद ने ₹सरकार की उपलब्धि एवं क्रियान्वयन₹ विषय पर विस्तृत चर्चा की और अभियान का समापन किया। यह प्रशिक्षण वर्ग भाजपा कार्यकर्ताओं को पार्टी के इतिहास, विचारधारा, कार्यपद्धति और बूथ प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। इस अवसर पर भाजपा के पदाधिकारी कार्यकर्ता आदि उपस्थित रहे।

योजनाओं व उपलब्धियों का दिया विस्तृत ब्यौरा

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। सोमवार को पशुधन एवं दुग्ध विकास तथा राजनीतिक पेंशन मंत्री धर्मपाल सिंह ने एनेक्सी सभागार में आयोजित प्रेस वार्ता में प्रदेश में पशुपालन, दुग्ध उत्पादन एवं पशुधन विकास से जुड़ी योजनाओं और उपलब्धियों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जैव विविधता से समृद्ध उत्तर प्रदेश देश में सर्वाधिक पशुधन वाला राज्य है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2019 की 20 वीं पशु गणना के अनुसार प्रदेश में 190.20 लाख गोवंश, 330.17 लाख महिष वंश, 144.80 लाख बकरी, 9.85 लाख भेड़ एवं 4.09 लाख सूकर हैं। वर्ष 2025 की 21वीं पशु गणना पूर्ण हो चुकी है, जिसका अंतिम आंकड़ा भारत सरकार द्वारा जारी किया जाएगा। उन्होंने बताया कि वर्ष 2023-24 में प्रदेश में 387.79 लाख मीट्रिक टन दुग्ध, 589.48 करोड़ अंडे तथा 1259 हजार टन मांस का उत्पादन हुआ। पशुपालकों को घर-घर चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध कराने के लिए मोबाइल वेटरिनरी यूनिट योजना के तहत टोल फ्री नंबर 1962 संचालित है। वर्ष 2024-25 में 15.93 लाख पशुपालकों के 32.34 लाख पशुओं तथा 2025-26 में अब तक 5.70 लाख पशुपालकों के 11.16 लाख पशुओं का उपचार किया गया।

प्रदेश में वर्तमान में 520 मोबाइल वेटरिनरी यूनिट संचालित हैं। टीकाकरण अभियान की जानकारी देते हुए मंत्री ने बताया कि वर्ष 2024-25 में 1648.89 लाख तथा 2025-26 में अब तक 817.96 लाख पशुओं का टीकाकरण किया जा चुका है। प्रदेश में 7608 गो-आश्रय स्थलों में 12.36 लाख से अधिक गोवंश संरक्षित हैं और 157 बड़े गौ संरक्षण केंद्र निर्माणाधीन हैं।

उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री सहभागिता योजना के तहत 1.79 लाख से अधिक गोवंश पशुपालकों को सुपुर्द किए गए हैं तथा भरण-पोषण हेतु डीबीटी के माध्यम से वित्तीय सहायता दी जा रही है। गोचर भूमि से अतिक्रमण हटाकर 11,952 हेक्टेयर से अधिक भूमि मुक्त कराई गई है, जिसमें बड़े पैमाने पर चारा उत्पादन किया जा रहा है।

नस्ल सुधार कार्यक्रम के तहत कृत्रिम गर्भाधान को बढ़ावा दिया जा रहा है। वर्ष 2024-25 में 238.20 लाख तथा 2025-26 में अब तक 115.97 लाख कृत्रिम गर्भाधान किए गए हैं। उन्होंने बताया कि नंद बाबा दुग्ध मिशन के अंतर्गत नंदिनी, मिनी नंदिनी एवं मुख्यमंत्री स्वदेशी गो संवर्धन योजनाएं संचालित हैं, जिनमें डेयरी इकाइयों पर 40% से 60% तक अनुदान दिया जा रहा है। साथ ही प्रगतिशील पशुपालकों को 10,000 से 15,000 रुपये तक प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

पशुधन बीमा, बकरी पालन, भेड़ पालन एवं कुक्कुट विकास योजनाओं के माध्यम से रोजगार सृजन पर विशेष जोर दिया जा रहा है।

राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकट की रिहाई को लेकर किसान यूनियन के कार्यकर्ताओं ने थाना बिनावर पुलिस को सोपे ज्ञापन

{बिनावर संवाददाता: शिवेंद्र यादव}

बिनावर: जनपद बदायूं के थाना बिनावर क्षेत्र में भारतीय किसान यूनियन के जिला अध्यक्ष अर्जुन सिंह व केसर अली ने थाना बिनावर का घेराव कर थाना पुलिस को ज्ञापन दिया गया है की भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैट को जो भुवनेश्वर उड़ीसा में गिरफ्तार किया गया है जब तक उन्हें रिहा न किया जाएगा तब तक किसान यूनियन के कार्यकर्ता आए दिन थाना बिनावर परिसर से लेकर जिला मुख्यालय तक धरना प्रदर्शन करते रहेंगे।

आज भारतीय किसान यूनियन टिकैट के कार्यकर्ताओं ने एकजुट होकर थाना बिनावर परिसर पर राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकट की रिहाई को लेकर थाना प्रभारी निरीक्षक अरिहंत कुमार सिद्धार्थ को ज्ञापन देकर मांग की है।

इस दौरान भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकट की गिरफ्तारी के संबंध में किसान यूनियन ने तीन मांगों को लेकर थाना बिनावर पुलिस को ज्ञापन सोपा है

1; राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकट को अति शीघ्र रिहा किया जाए अन्यथा हमारा धरना प्रदर्शन किया जाएगा।

2; और रिहाई नहीं होने पर गिरफ्तारी भी दी जाएगी।

3; हमारे किसान नेता राकेश टिकट जी को सा सम्मान के साथ रिहाई की मांग की जाती है अन्यथा उग्र आंदोलन किया जाएगा

इस मौके पर भारतीय किसान यूनियन के कार्यकर्ता अर्जुन सिंह जिला अध्यक्ष, पप्पू सैफी, कैसर अली पूर्व प्रधान, सुरेश गुप्ता दीवान जी, तस्लीम भगवानदास सहित दर्जन ऑन कार्यकर्ता मौजूद रहे।

इस संबंध में को सीओ सिटी बदायूं का कहना है कि थाना बिनावर पर जो किसान यूनियन द्वारा ज्ञापन दिया गया है वह भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैट की रिहाई को लेकर किसान धरना दिया गया है।

जानलेवा जाम से जूझता कानपुर, एंबुलेंस फंसने से मरीज पहुंचा मौत के करीब,भर्ती

सुनील बाजपेई

कानपुर। जगह-जगह पर भीषण जाम की समस्या ने आज रविवार को एक मरीज की जिंदगी खतरे में डाल दी। मुरारी लाल चेस्ट हॉस्पिटल में भर्ती होने के पहले तक भीषण जाम के रूप में यह मौत मरीज के सामने नाचती हुई नजर आई। जाम में फांसी एंबुलेंस को बड़ी मुश्किल से बाहर निकालने के बाद उसे अस्पताल में भर्ती कराया जा सका।

यह जानलेवा हालत तब पैदा हुए जब जीटी रोड पर मुरारी लाल चेस्ट हास्पिटल के सामने अतिक्रमण अभियान के चलते रविवार दोपहर लगभग 2 किलोमीटर तक भीषण जाम लग गया। मुरारी लाल चेस्ट हॉस्पिटल से लेकर गुरुदेव चौराहे तक लंबे जाम में वाहन रेंगते रहे। इसमें कई एंबुलेंस फंसी रही।

जानकारी के मुताबिक एंबुलेंस में गंभीर रूप से बीमार बुजुर्ग रामकृष्ण को बिल्हौर से कानपुर रेफर किया गया था, डेढ़ घंटे तक जाम में मरीज तड़पता रहा और इस दौरान परिजन परेशान हो गए। आक्सीजन के सहारे महज 2 से 3 किमी. का सफर तय करने में डेढ़ घंटे से ज्यादा का समय लग गया और मरीज की जान सांसत में फंस गई। करीब डेढ़ घंटे बाद परिवार के लोग मरीज को मुरारी लाल चेस्ट हास्पिटल में आकर भर्ती कराया। अवगत कराते चलें कि इसके पहले भी जाम की समस्या और भी कई मरीजों की असमय मौत का कारण बन चुकी है।

महर्षि पराशर वैदिक ट्रस्ट का 7वाँ वार्षिक उत्सव भव्य रूप से सम्पन्न

मनोरंजन शासमल स्टेट हेड ओडिशा

कटक : महर्षि पराशर वैदिक ट्रस्ट का 7वाँ वार्षिक उत्सव मधुपुर, बारंगा, कटक में अत्यंत गरिमामय एवं आध्यात्मिक वातावरण में भव्य रूप से आयोजित किया गया। इस अवसर पर राज्य के विभिन्न स्थानों से 200 से अधिक ज्योतिषी, वास्तुविद, कर्मकांड विशेषज्ञ, आध्यात्मिक चिंतक एवं समाजसेवी उपस्थित हुए, जिससे कार्यक्रम और अधिक गौरवपूर्ण बन गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में ओडिशा की प्रथम महिला इंजीनियर एवं प्रख्यात समाजसेवी इंजीनियर रेनुबाला मोहंती ने सहभागिता की और अपने प्रेरणादायक वक्तव्य में समाज में नैतिक मूल्यों एवं आध्यात्मिकता की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। सम्मानित अतिथि के रूप में अधिवक्ता एवं समाजसेवी श्रीमती मृणालिनी पाढ़ी तथा चार्टर्ड अकाउंटेंट एवं समाजसेवी श्री रामकांत महापात्र उपस्थित थे। मुख्य वक्ता के रूप में "समाज" समाचार पत्र के संपादक डॉ. प्रभास आचार्य ने ज्योतिष शास्त्र के वैज्ञानिक दृष्टिकोण, उसकी आधुनिक प्रासंगिकता तथा समाज निर्माण में उसकी भूमिका पर गहन विचार प्रस्तुत किए।

ट्रस्ट के अध्यक्ष इंजीनियर जगन्नाथ महापात्र की अध्यक्षता में आयोजित इस सभा में सचिव आचार्य आशीष कुमार नायक, उपाध्यक्ष डॉ. सौम्य दर्शन महांती तथा ट्रस्ट के अन्य पदाधिकारियों ने कार्यक्रम के सफल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पब्लिक रिलेशन के रूप में इंजीनियर एस. सौम्य रंजन बलियारसिंह, कोषाध्यक्ष श्री प्रगति रंजन महापात्र, श्रीमती सुदीप्ता मिश्रा तथा अन्य सलाहकारों एवं सदस्यों के सामूहिक प्रयास से यह कार्यक्रम सफल हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य अभय कुमार महापात्र द्वारा वेद पाठ एवं मंगलाचरण से किया गया, जिससे वातावरण आध्यात्मिकता से ओतप्रोत हो गया। मंच संचालन डॉ. सौम्य दर्शन महांती द्वारा अत्यंत सुंदर एवं सुव्यवस्थित ढंग से किया गया।

इस अवसर पर ओडिसी नृत्य सहित विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। साथ ही ज्योतिष शास्त्र के वैज्ञानिक पक्ष पर महत्वपूर्ण चर्चा भी की गई।

इस दौरान अनेक प्रतिभाशाली ज्योतिषियों, वास्तुविदों एवं समाजसेवियों को "ज्योतिष सम्राट" एवं "ज्योतिष वाचस्पति" सम्मान से सम्मानित किया गया।

अंत में सचिव आचार्य आशीष कुमार नायक ने उपस्थित सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कार्यक्रम के सफल समापन की घोषणा की।

ग्रेसियस इंस्टीट्यूट में लैंप लाइटिंग व दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन...

डॉ. शंभु पंवार ।नई दिल्ली,30 मार्च। ग्रेसियस इंस्टीट्यूट में आयोजित दो दिवसीय वार्षिक उत्सव ग्रेस कार्निवल २०२६ के द्वितीय दिन ग्रेसियस कॉलेज ऑफ नर्सिंग के अंतर्गत लैंप लाइटिंग एवं दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के डायरेक्टर डॉ. आशुतोष शुक्ला ने की। जबकि मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ शासन के कैबिनेट मंत्री केदारनाथ कश्यप रहे,एवं आईएएस अधिकारी श्याम लाल धावडे, डॉ. हर्षित मिश्रा, डॉ. पूनम मिश्रा, डॉ. अनुराग जैन एवं श्रीमती भारती शुक्ला विशिष्ट अतिथि रहे ।कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। अतिथियों के स्वागत के पश्चात प्राचार्य ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. आशुतोष शुक्ला ने कहा कि नर्सिंग एक सेवा प्रधान पेशा है, जिसमें कर्तव्यनिष्ठा, संवेदनशीलता और समर्पण सर्वोपरि होते हैं। मुख्य अतिथि केदारनाथ कश्यप ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि वे सेवा भाव और नैतिक जिम्मेदारी के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें। विशिष्ट अतिथि डॉ. हर्षित मिश्रा ,श्याम लाल धावडे ने भी विचार व्यक्त किए। अतिथियों द्वारा नर्सिंग एवं फार्मेसी के प्रतिभावान विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र, मेडल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया ।लैंप लाइटिंग समारोह से पूर्व डॉ.गीतांजलि मानिकपुरी द्वारा नर्सिंग विद्यार्थियों को सेवा, समर्पण और नैतिकता की शपथ दिलाई गई। इसके पश्चात विद्यार्थियों ने दीप प्रज्वलन कर सेवा के पथ पर अग्रसर होने का संकल्प लिया ।समारोह के अंतर्गत दीक्षांत कार्यक्रम में विद्यार्थियों को प्रतिभा सम्मान से नवाजा गया।

वर्तमान और भविष्य के पथप्रदर्शक अहिंसा के 'महावीर'

डॉ घनश्याम बादल

दुनिया भर के 193 देश में से 54 देश इस समय अंदरूनी संघर्ष, हिंसा या अंतरराष्ट्रीय युद्ध अथवा आतंकवाद से त्रस्त हैं। अखबारों, टीवी चैनलों, सोशल मीडिया या अन्य मंचों से लगातार खून खराबे एवं विनाशकारी धमाकों के समाचार मिल रहे हैं। ऐसे में जब विश्व के विभिन्न कोनों से युद्ध, हिंसा और संघर्ष की खबरें लगातार सामने आ रही हों, जब मानवता भय और असुरक्षा के साये में जी रही हो, तब इतिहास के उन प्रकाशमान व्यक्तित्वों की स्मृति अत्यंत आवश्यक हो जाती है, जिन्होंने शांति, करुणा और सह-अस्तित्व का मार्ग दिखाया।

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी ऐसे ही युगद्रष्टा थे, जिन्होंने अपने समय में हिंसा एवं खून खराबे से त्रस्त दुनिया को अहिंसा, शांति, अस्तेय, अपरिग्रह, अनेकांतवाद एवं ब्रह्मचर्य का संदेश दिया उनकी जयंती आज केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि पूरी मानवता के लिए आत्ममंथन का अवसर है।

महावीर स्वामी का जन्म 599 ईसा पूर्व वैशाली के कुंडलपुर में हुआ था। उनका बचपन का नाम वर्धमान था। राजसी वैभव में जन्म लेने के बावजूद उनके भीतर सांसारिक सुखों के प्रति कोई विशेष आकर्षण नहीं था। बचपन से ही उनमें करुणा, संयम और वैराग्य के गुण स्पष्ट दिखाई देते थे। जीवन के गूढ़ प्रश्नों-दुख, मृत्यु और आत्मा की मुक्ति ने उन्हें भीतर तक झकझोर दिया। यही बेचैनी उन्हें 30 वर्ष की आयु में गृहत्याग की ओर ले गई।

बाद में महावीर बने वर्धमान ने संन्यास ग्रहण करने के बाद बारह वर्षों तक कठोर तपस्या की यह तप केवल शरीर को कष्ट देने का अभ्यास नहीं था, बल्कि आत्मा की शुद्धि का मार्ग था। उन्होंने अपने भीतर के क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को जीतने का प्रयास किया। अंततः उन्हें कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ और वे 'महावीर' कहलाएअर्थात वह जिसने स्वयं पर विजय प्राप्त कर ली हो।

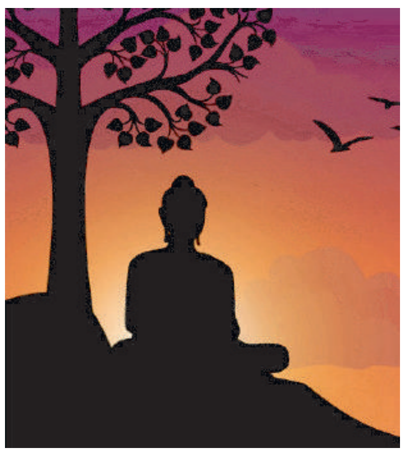

महावीर स्वामी के उपदेशों में जैन धर्म की मूल शिक्षाएं निहित हैं, जो मानव जीवन को संतुलित और शांतिपूर्ण बनाने का मार्ग दिखाती हैं। जैन धर्म के प्रमुख सिद्धांतों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को पंचमहाव्रत कहा गया है।

अहिंसा जैन धर्म का सबसे केंद्रीय और महत्वपूर्ण सिद्धांत है। इसका अर्थ केवल किसी प्राणी की हत्या न करना मात्र नहीं, बल्कि किसी भी जीव को मन, वचन और कर्म से कष्ट न पहुंचाना है। आज जब युद्धों में निर्दोष लोग मारे जा रहे हैं, जब समाज में छोटी-छोटी बातों पर हिंसा हो रही है, तब यह सिद्धांत हमें याद दिलाता है कि सच्ची मानवता करुणा में निहित है।

महावीर की नज़र में सत्य का अर्थ है-विचार, वाणी और आचरण में सत्यनिष्ठा। आज के समय में जब झूठ और भ्रम फैलाना आसान हो गया है, सत्य का पालन करना एक साहसिक कार्य बन गया है। महावीर का यह संदेश हमें नैतिकता की ओर लौटने के लिए प्रेरित करता है।

'अस्तेय' यानी चोरी न करना, केवल भौतिक वस्तुओं तक सीमित नहीं है। यह दूसरों के अधिकारों और अवसरों का सम्मान करने का भी संदेश देता है। आधुनिक समाज में भ्रष्टाचार और शोषण इसी सिद्धांत के उल्लंघन का परिणाम हैं।

ब्रह्मचर्य आत्मसंयम और इंद्रिय-निग्रह का प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि जीवन में संतुलन और अनुशासन कितना आवश्यक है।

'अपरिग्रह' यानी संग्रह न करना, आज के उपभोक्तावादी युग में अत्यंत प्रासंगिक है। संसाधनों की अंधाधुंध होड़, लालच और असमानता ही कई बार संघर्ष और युद्ध का कारण बनती है। यदि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर ले, तो समाज में संतुलन स्थापित हो सकता है।

महावीर स्वामी का दिया हुआ जैन धर्म का एक और महत्वपूर्ण सिद्धांत है अनेकांतवाद। इसका अर्थ है कि सत्य के अनेक पक्ष होते हैं। कोई भी व्यक्ति या विचार पूर्ण सत्य का अकेला स्वामी नहीं हो सकता। आज जब दुनिया विचारधाराओं की कट्टरता और असहिष्णुता से जूझ रही है, यह सिद्धांत संवाद, सहिष्णुता और सह-अस्तित्व की राह दिखाता है।

निसंदेह महावीर स्वामी का जीवन इस बात का उदाहरण है कि परिवर्तन भीतर से शुरू होता है। उन्होंने न कोई युद्ध लड़ा, न किसी सत्ता को चुनौती दी, फिर भी उनके विचारों ने करोड़ों लोगों के जीवन को प्रभावित किया। यह इस बात का प्रमाण है कि विचारों की शक्ति किसी भी हथियार से अधिक प्रभावशाली होती है।

आज के वैश्विक परिदृश्य में, जहां युद्ध और शक्ति प्रदर्शन को ही श्रेष्ठता का प्रतीक माना जा रहा है, महावीर का यह संदेश अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि "क्षमा ही वीर का आभूषण है।" यह हमें सिखाता है कि सच्ची बहादुरी दूसरों को हराने में नहीं, बल्कि अपने भीतर की हिंसा को समाप्त करने में है।

वर्तमान समय में महावीर स्वामी की प्रासंगिकता और आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। जब दुनिया परमाणु हथियारों की होड़ में लगी हो, जब राष्ट्र अपने हितों के लिए मानवता को दांव पर लगाने से भी पीछे न हटें, तब महावीर का अहिंसा का सिद्धांत ही एकमात्र ऐसा मार्ग है जो हमें विनाश से बचा सकता है। यदि दुनिया से चीखों, चीत्कारों, रुदन और पीड़ा का अंत करना है तो महावीर स्वामी के बताए रास्ते पर चलना ही एकमात्र उपाय है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम महावीर स्वामी को केवल एक धार्मिक प्रतीक के रूप में न देखें, बल्कि उनके विचारों को अपने जीवन में उतारें। यदि व्यक्ति स्तर पर अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह का पालन किया जाए, तो समाज और राष्ट्र स्तर पर भी शांति स्थापित हो सकती है।

महावीर जयंती का पर्व हमें केवल उनके जीवन की स्मृति नहीं दिलाता, बल्कि एक संकल्प लेने का अवसर देता है-अहिंसा का, सहिष्णुता का और मानवता के उत्थान का। यही वह मार्ग है जो आज के हिंसक और अस्थिर विश्व को शांति और स्थिरता की ओर ले जा सकता है।

इसमें दो राय नहीं कि महावीर स्वामी केवल अतीत के महापुरुष नहीं हैं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के मार्गदर्शक हैं। उनकी शिक्षाएं समय की सीमाओं से परे हैं। आज जब दुनिया को सबसे अधिक आवश्यकता शांति और सह-अस्तित्व की है, तब महावीर का दर्शन ही वह प्रकाश है, जो हमें सही दिशा दिखा सकता है।

FICCI FLO अमृतसर को जनरल बॉडी मीटिंग में उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया

अमृतसर 3 मार्च (साहिल बेरी)

29 मार्च 2026 को आयोजित FICCI FLO की जनरल बॉडी मीटिंग में देशभर के विभिन्न चैप्टर्स ने भाग लिया। इस बैठक का उद्देश्य वर्षभर के कार्यों की समीक्षा करना, अनुभवों का आदान-प्रदान करना और प्रभावशाली योगदानों को सम्मानित करना था।

चेयरपर्सन मोना सिंह के नेतृत्व में FICCI FLO अमृतसर को वर्षभर किए गए अपने कार्यों के लिए उच्च सराहना प्राप्त हुई। इस चैप्टर को महिला-नेतृत्व वाले उद्यमिता को बढ़ावा देने, पारंपरिक हस्तशिल्प और वस्त्रों के पुनर्जीवन, तथा कौशल विकास, उद्यम और आर्थिक भागीदारी के लिए सार्थक मंच तैयार करने के लिए विशेष रूप से मान्यता दी गई।

पिछले वर्ष के दौरान, FLO अमृतसर ने कई पहलें कीं, जिनमें बड़े स्तर के कॉन्क्लेव, सांस्कृतिक कार्यक्रम, कौशल विकास कार्यशालाएं और उद्योग से जुड़े संवाद शामिल थे। इन पहलों ने जमीनी स्तर पर भागीदारी को मजबूत किया और व्यापक स्तर पर संवाद के नए अवसर भी प्रदान किए। इस चैप्टर ने कारीगर समुदायों के समर्थन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और पंजाब को डेस्टिनेशन वेडिंग्स और सांस्कृतिक पर्यटन के क्षेत्र में उभरती पहचान दिलाने में योगदान दिया।

सामाजिक प्रतिबद्धता की मजबूत भावना के साथ, चैप्टर ने बाढ़ राहत कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाई और प्रभावित समुदायों तक समय पर सहायता पहुंचाई। इसके साथ ही, सामुदायिक विकास कार्यक्रम के अंतर्गत गांवों को अपनाकर सशक्तिकरण, आधारभूत संरचना और क्षमता निर्माण के माध्यम से दीर्घकालिक प्रभाव सुनिश्चित करने की दिशा में कार्य किया।

सा मु दा यि क - आ धा रि त कार्यक्रमों, युवा सहभागिता और संस्थागत सहयोग के माध्यम से, FLO अमृतसर ने अपनी पहुंच का विस्तार किया और महिलाओं के विकास एवं उद्यमिता को समर्थन देने वाला एक सशक्त एवं समग्र इकोसिस्टम तैयार किया।

अपने उत्कृष्ट कार्यों की मान्यता स्वरूप, FLO अमृतसर को राष्ट्रीय मंच पर सम्मानित किया गया, जिससे FLO नेटवर्क में इसकी अग्रणी पहचान और भी सुदृढ़ हुई।

यह सम्मान इसकी स्पष्ट दृष्टि, निरंतर प्रयासों और इसके सदस्यों की सामूहिक शक्ति का प्रतिबिंब है।

भारत ने रचा इतिहास: गीतांजलि ओम प्रकाश बनीं Mrs International World Classic 2026

अमृतसर 30 मार्च (साहिल बेरी)

भारत के लिए गर्व का क्षण है कि 59 वर्षीय श्रीमती गीतांजलि ओम प्रकाश को 27 मार्च 2026 को मलेशिया के कुआलालंपुर में आयोजित ग्रैंड फिनाले में Mrs International World Classic 2026 का ताज पहनाया गया। यह ऐतिहासिक जीत इसलिए भी खास है क्योंकि पहली बार भारत ने यह प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय खिताब अपने नाम किया है।

श्रीमती ओम प्रकाश ने प्रतियोगिता के सभी चरणों—पर्सनल इंटरव्यू, स्विमसूट राउंड, नेशनल कॉस्ट्यूम राउंड और इवनिंग गाउन राउंड—में शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने अपनी शालीनता, आत्मविश्वास और दमदार व्यक्तित्व से जजों को प्रभावित किया। ताज के साथ-साथ उन्हें "Mrs Empowerment" का विशेष सम्मान और "Most Exotic National Costume" का खिताब भी मिला।

उनका सामाजिक कार्य महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने, खासकर वंचित वर्गों से आने वाली महिलाओं के लिए अवसर पैदा करने पर केंद्रित है। साथ ही, वे युवा पीढ़ी के लिए कौशल आधारित अवसरों को बढ़ावा देने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं।

उनका जीवन सफर आसान नहीं रहा। 32 वर्ष की उम्र में रूमेटॉइड आर्थराइटिस के कारण वह कई महीनों तक बिस्तर पर रहीं। एक समय ऐसा भी आया जब दोबारा चलने की उम्मीद भी धुंधली लगने लगी थी। लेकिन उन्होंने हार मानने के बजाय हिम्मत को चुना। इसी अनुभव ने उन्हें यह सिखाया किः

"मुश्किलें हमें नहीं परिभाषित करतीं, बल्कि उनका सामना करने का हमारा तरीका हमें परिभाषित करता है।"

आज अंतरराष्ट्रीय मंच पर ताज पहनकर वह शक्ति, धैर्य और आत्म-नवीनता की मिसाल बन चुकी हैं। खासकर उन महिलाओं के लिए प्रेरणा हैं, जिन्हें उम्र के कारण कम आंका जाता है।

उनका संदेश बेहद प्रेरणादायक है—अनुभव ही असली ताकत है और जिंदगी का सबसे खूबसूरत अध्याय अभी बाकी हो सकता है।

उनके शब्दों में:

"आईने, आईने दीवार पर, वह महिला कभी नहीं टूटती जो मजबूती से खड़ी रहना चुनती है।"

गीतांजलि ओम प्रकाश की यह जीत केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि एक आंदोलन है—यह याद दिलाने के लिए कि उम्र सिर्फ एक संख्या है और सपनों की कोई सीमा नहीं होती।

महरौली पुलिस ने 24 घंटे में सुलझाया लूट का मामला, तीन आरोपी दबोचे

चाकू दिखाकर राहगीरों से पैसे मांग रहे थे आरोपी, एक गिरफ्तार और दो नाबालिग हिरासत में

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। दक्षिण जिला की महरौली थाना पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए लूट के एक मामले का महज 24 घंटे के भीतर खुलासा कर दिया। पुलिस ने घटना में शामिल एक आरोपी को गिरफ्तार किया है, जबकि उसके साथ शामिल दो नाबालिगों को हिरासत में लिया गया है। आरोपियों के कब्जे से वारदात में इस्तेमाल किया गया चाकू, नकदी और मोटरसाइकिल बरामद की गई है। पुलिस के अनुसार, 27 मार्च 2026 की सुबह करीब 6 बजे चतरपुर स्थित हनुमान मंदिर के गेट नंबर-8 के पास कुछ लोगों द्वारा चाकू दिखाकर राहगीरों को धमकाने और उनसे पैसे मांगने की सूचना मिली थी। सूचना मिलते ही महरौली थाना पुलिस की टीम तुरंत मौके पर पहुंची और मार्कंडेय मंडपम के पास संदिग्ध युवकों को घेर लिया। मौके पर मौजूद शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया कि तीन युवक मोटरसाइकिल पर आए थे। उन्होंने चाकू दिखाकर उससे लूटपाट करने का प्रयास किया और पैसे मांगने लगे। घटना की जानकारी तुरंत पीसीआर को भी दी गई थी। शिकायत के आधार पर महरौली थाने में एफआईआर संख्या 191/26 दर्ज कर भारतीय न्याय संहिता और किशोर न्याय अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया। जांच के दौरान पुलिस ने मुख्य आरोपी नदीम पुत्र शाकिर हुसैन, निवासी बापू कॉलोनी, गांव मंडी, दिल्ली, उम्र 30 वर्ष को गिरफ्तार कर लिया। वहीं उसके साथ मौजूद दो नाबालिग लड़कों को भी पकड़ लिया गया। दोनों नाबालिगों की उम्र 16 और 17 वर्ष बताई गई है। पुलिस ने आरोपियों के पास से वारदात में इस्तेमाल किया गया चाकू, 100 रुपये नकद तथा घटना में प्रयुक्त मोटरसाइकिल बरामद की है। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि आरोपियों का मकसद लूटपाट करना था। हालांकि अब तक की जांच में इनके किसी पुराने आपराधिक रिकॉर्ड की जानकारी नहीं मिली है।

दक्षिण जिला पुलिस उपायुक्त अनंत मित्तल ने बताया कि पुलिस की सतर्कता और त्वरित कार्रवाई के कारण आरोपियों को मौके पर ही दबोच लिया गया। उन्होंने कहा कि इलाके में कानून व्यवस्था बनाए रखने और अपराध पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस लगातार गश्त और निगरानी बढ़ा रही है।

पुलिस अब मामले की आगे की जांच कर रही है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि आरोपी पहले भी किसी अन्य वारदात में शामिल रहे हैं या नहीं।

डीओए, सीएनआई, ने पाम संडे पर शांति मार्च निकाला

अमृतसर, 29 मार्च (साहिल बेरी)

पश्चिम एशिया में चल रहे संकट के बीच, अमृतसर के ईसाई समुदाय ने पाम संडे के अवसर पर, जिसे हर साल 'शांति दिवस' के रूप में मनाया जाता है, डायोसिस ऑफ़ अमृतसर (डीओए), चर्च ऑफ नॉर्थ इंडिया (सीएनआई) के तत्वावधान के आधीन एकजुट होकर एक 'पाम संडे शांति मार्च' निकाला। इस मार्च का उद्देश्य विपरीत परिस्थितियों में सद्भाव और आपसी समझ को बढ़ावा देने की साझा प्रतिबद्धता के तहत विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों को एक साथ लाकर शांति और आशा का संदेश फैलाना था। यह मार्च अमृतसर के कोर्ट रोड स्थित सेंट पॉल चर्च से शुरू हुआ और शहर की मुख्य सड़कों से होते हुए क्राइस्ट चर्च कैथेड्रल तक पहुँचा, जहाँ से इसने यू-टर्न लिया और वापस सेंट पॉल चर्च, जो इसका समापन बिंदु था, लौट आया।

खजूर की डालियाँ और खजूर के पत्तों से बने क्रॉस हाथों में लिए हुए, अमृतसर के ईसाई शहर की सड़कों पर उतरे और ऊँची आवाज़ में घोषणा की, ₹होशन्ना ! धन्य है वह जो प्रभु के नाम पर आता है !₹ इस कार्यक्रम से पहले, अमृतसर, अजनाला, बटाला, खेमकरण, तरनतारन, अटारी और भिंडी सैदां सहित डायोसिस के विभिन्न स्थानों पर स्थित चर्चों में विशेष प्रार्थना सभाएँ आयोजित की गईं।

द राइट रेवरेंड मनोज चरन, बिशप, डीओए, सीएनआई, ने वैश्विक शांति की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए कहा, ₹संघर्षों और अनिश्चितताओं से जूझ रही इस दुनिया में, हमें शांति के लिए प्रयास करना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसा यीशु मसीह ने हमें सिखाया है। शांतिदूतों के रूप में, हमें परमेश्वर पिता की संतान बनने के लिए बुलाया गया है, ताकि हम भाईचारे का प्रेम, सद्भाव और आपसी समझ फैला सकें।

डीओए, सीएनआई, की अमृतसर डायोसिसन ट्रस्ट एसोसिएशन के सचिव, श्री डैनियल बी दास ने शांति को बढ़ावा देने के लिए सूबा के प्रयासों पर प्रकाश डालते हुए कहा, ₹हमारी कल्याणकारी पहलें, जिनमें सामाजिक-आर्थिक विकास कार्यक्रम और अन्य परियोजनाएँ शामिल हैं, लोगों के कल्याण के लिए समर्पित हैं—विशेष रूप से हाशिए पर पड़े लोगों के लिए—और ये एक प्रकार की 'कर्म-प्रार्थना' हैं, जिनका उद्देश्य हमारे समुदायों में शांति को बढ़ावा देना है।

प्रतिभागियों के एक विशाल और विविध समूह ने—जिसमें पादरी, अमृतसर स्थित डायोसिस के तीन चर्चों के अनुयायी, डायोसिसन कार्यालय के पदाधिकारी, डायोसिसन कार्यकारी समिति के सदस्य, तथा हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर के प्रतिनिधि शामिल थे—एकजुट होकर इस पाम संडे शांति मार्च में हिस्सा लिया।

राजा सरायकेला एवं पूर्व मुख्यमंत्री ने ऐतिहासिक अखाड़े स्थल से आरंभ किया जूलूस

बेनी बाबू अखाड़ा , राजूभोल युद्ध फरिखार का स्थल है सरायकेला का यह महावीर अखाड़ा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , चैत्र शुक्ल रामनवमी के पावन अवसर पर महावीर अखाड़ा जूलूस महादेव जी का पंचदेउल , श्री राम व बंजर वली मंदिर पास से आरंभ हुआ ।इस ऐतिहासिक स्थल का पुराना संबंध सरायकेला छऊ के उन्नत कोटी के गुरु बेनी बाबू के अखाड़ा व उत्कलीय फरिखंडा धारी फरिखार राजूभोल का इलाका रहा है । जूलूस का आरंभ सरायकेला के राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव व पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन तथा जलेश कवि को बजरंगबली कद-काठी की प्रतिमा के सामने सांकेतिक रूप से आरंभ तलवार व लाठी संचालित कर किया गया ।

राजा सरायकेला प्रताप आदित्य सिंहदेव , पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन समाजसेवी जलेश कवि समेत कर्मठ युवाओं द्वारा पारंपरिक रूप से श्री गणेश तलवार चलाकर बाजे गाजे के साथ किया गया। इस दौरान आकर्षक झांकियां, पारंपरिक वाद्य यंत्रों की धुन और जय श्रीराम के जयघोष से पूरा वातावरण गुंजायमान हो उठा ।

अगर हम देवता व स्थल विशेष पर जाएं तो हमारे शास्त्रों में एकादश रूद्र के रूप में हनुमान जी जाने जाते है। मां अंजनी के लाल वज्र -अंग -बली जी की आराधना उनकी हर मंदिर में आज होती है। और लाठी ,तलवारें लहराकर उनके सम्मान में प्रदर्शित होते है । हनुमान जी को ओड़िया सैन्य सामंत तब अपनी तलवारों में आवाहन कर स्थान देते साथ ही उन भैरव, भैरवियों को जब वे युद्ध में जाते ।व्यास देव लिखते हैं आप महाभारत युद्ध में भी कपिध्वज के रूप में अर्जुन के रथ पर विराजमान थे ।

भले ही यह उत्कल भू खंड आज झारखंड में है , यह इलाका जो सरायकेला मांजना घाट के समक्ष है बड़ा ही ऐतिहासिक महत्व रखता है सरायकेला स्टेट माटी में ।

यह स्थल जहां यह आयोजन हुआ है प्रख्यात छऊ गुरू बेनी बाबू का अखाड़ा रहा ।अखाड़ा का अर्थ जहां छावनी से आया छऊ का रियाज का अखाड़ा रहा ,70-80 वर्ष के पहले तक यहां अखाड़े लगते थे ।वही तलवारें वही लाठियां भांजी जाती थई गुरूओ व उनके शागिर्दों के बीच । यह प्रतिकात्मक सन्देश है मौजूदा समाज को उस एग्रीमेंट को को लेकर जिसे सरायकेला के अन्तिम शासक राजा आदित्य प्रताप सिंहदेव एवं लौह पुरुष के सचिव द्वारा 1947 में सरायकेला की कला - संस्कृति को ओडिशा के तर्ज पर रखे जाने हेतु देश को वचनबद्ध किया था ।

सरायकेला छऊ नृत्य कला केंद्र का जहां हर वर्ष केवल आठ आठ प्रतिकात्मक अखाड़े होने की बात कही जाती आवाज़ बुलंद कर सच तो यह है कि अतीत के उन युद्ध अखाड़े किनके रहे किनके द्वारा संचालित होता रहा एवं पोषक कौन थे कोई नहीं बताता -ऐसा क्यों भाई ? यह देश का ऐतिहासिक धरोहर भी है जहां से सरायकेला के जनता की वैश्विक कला छऊ का इतिहास जूड़ा है ।उसकी भाषा , संस्कृति, साहित्य , परंपरा ओड़िया जनमानस का है ।तब तो श्री कलापीठ विदेशों में बतलाता था 70-80 वर्ष पूर्व । आज अपनी माटी में इतिहास दफन हो रहा है । इतनी बड़ी देश की एक समर कला छऊ अपनी मार्शल आर्ट ट्रेडिशन के साथ ।

सच तो यह है राजा गण सरायकेला राज्य उसके कला संस्कृति , भाषा , स्वाभिमान के वास्तविक पृष्ठ पोषक रहे हैं । एक जमाना था पहले आठ नहीं अनेक पाईक अखाड़े रहे सरायकेला राज्य भर में लड़ाई -युद्ध के रियाज निमित्त उनका संरक्षक Serailkella Priencly State करता रहा । आज राजनीति की षड्यंत्रकारी कदम उसे समाप्त कर रखा है । यह इस माटी की वैभवशाली गाथा है अखाड़े को समर्पित , सामने में आनी चाहिए सरायकेला के वीरों की, शासकों की ऐतिहासिक अमानत । सच पुछिए तो आज तो हमारी सरायकेला छऊ भी परिचय का मोहताज है गया है । सरायकेला में Serailkella Priencly State को ,राजा सरायकेला को ,उनके इतिहास को हर हाल में सुरक्षा देने की जरूरत है ।कारण यह हमारी अंतरात्मा की पहचान है ।

जुलूस में शामिल युवाओं ने पारंपरिक अखाड़ा प्रदर्शन कर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में लिपु मोहंती, बापि मोहंती, भगरथी परिछा, जॉनी हजरा, बिशु कवि, दीपेश रथ, सीपु मोहंती, आकाश कर, शुभम कर, शिबा विषय, दीपु मोहंती, मोहित बोल, निखिल बोल, चिकु मोहंती, पवन कवि, करण साहु, मिकु मोहंती, नीरज दास, आकाश कुमार, सरोज महापात्र, सूरज महतो, रितेश महापात्र, सत्यम कर, विशाल दास, ऋषि साहु, अर्जुन कर, सोम कवि सहित सैकड़ों की तादाद में छोड़े बड़े तलवार , डंडे धारी , समिति के सदस्य एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे ।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023